कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः18, अंकः 04
जनवरी 2019

महाभारत से जुड़े...

रघुनाथ प्रसाद सर्राफ........7

क्या नग्नता आधुनिकता का प्रतीक है.

-नीलम कपूर......12

इस अंक में......

वैज्ञानिक गौसम्वर्धन-कृष्णचन्द्र टवाणी.............. २६

हिंदी के व्यापक प्रचार-विकास में देवनागरी की भूमिका
-गणेश प्रसाद महता २६

स्थायी स्तम्भ

संपादक के नाम पाती, प्रेरक प्रसंग 4, 5
अपनी बातः प्रधानमंत्री जी ये आग कब बुझेगी 06
महिलाओं के कपड़े 1980 से अब तक 14
अध्यात्मः मानवता विषयक चिन्तन................ 15
हिन्दीतर भाषी रचनाकार-ऊँ नमः शिवाय-विजय कुमार सम्पत्त 16
कविताए/गीत/ग़ज़लः डॉ० किश्वर सुल्ताना, अखिलेश निगम, आचार्य भगवत दुबे, डॉ० पार्वती यादव, रमेशराज, अनुमपा श्रीवास्तव, नीलिमा शर्मा 18—20
कहानीः बुआजी-डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी, पहला कदम-पवित्रा अग्रवाल 21—25,
स्वास्थ्य, साहित्य समाचार, . 30, 31, 32, 42—44, 48—50
लघु कथाएंः शबनम शर्मा, अखिलेश निगम 'अखिल' 27—28
समीक्षाः नव अर्श के पांखी 33
काव्य सम्राट : रचनाकार 34—50

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.—93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद —211011 का0: 09335155949
ई—मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।
प्रिंट लाईन—विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

नोटःपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन—जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद—विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

सिसक रही भारतमाता

ऋषि-मुनियों का देश रहा है हमारा भारतवर्ष, सैकड़ों सालों तक गुलामी की जंजीरों में जकड़े रहने के बावजूद भी हमारी महानता फीकी न पड़ी, परन्तु जैसे ही हमको आजादी मिली हम भटक गये. आज चारों तरफ चीत्कार ही चीत्कार सुनाई देता है. देश के कोने-कोने में ऐसी-ऐसी नित घटनाएं घट रही हैं कि भारतमाता षर्म से अपना मुंह छुपाए सिसक रही है. देष डूब रहा है और देष चलाने वाले दुनिया की सैर कर रहे हैं. चारों तरफ भूख, गरीबी, बीमारी, बेरोजगारी, बलात्कार की घटनाएं भयंकर ताण्डव कर रही हैं और सरकारी विज्ञापन बता रहे हैं कि हम विकास में चीन, जापान, इंगलैड, अमेरिका को पीछे छोड़ने वाले हैं. आए दिन हम पाकिस्तानी आतंकवादी संगठनों के लिए रोते रहते हैं और हमारे देष में ऐसे अनगिनत संगठन दिन दहाड़े राश्ट्रीय सम्पत्ति को लूट रहे हैं या नश्ट कर रहे हैं. बीच सडकों-चौराहों पर खून बहा रहे हैं. दुःख तो तब होता है जब ऐसे संगठनों को सरकारें आर्थिक मदद देती हैं और पुलिस-फौज इनके सामने भीगी बिल्ली बनी देष जलते हुए देखती रहती हैं. आखिर क्या वजह है कि राश्ट्रीयता से ऊपर जातीय या धार्मिक संगठन इतने मजबूत क्यों हैं?

हमारे देष के नेता नहीं चाहते कि सांप्रदायिक राजनीति खत्म हो. जातीय या धार्मिकता फैलाकर बडी आसानी से भोले भाले भारतीयों को बहकाया जा सकता है, नेता ऐसा करते हैं और सफल भी हो जाते हैं. फिर इस आग को जलाकर अपने स्वार्थ की रोटियां सेकते हैं. जलकर खाक होती है भारतमाता, स्विस खाते लबालब होते रहते हैं नेताओं के व इनके सहयोगी पूंजीपति, धर्मगुरू, क्रिकेटर, अभिनेता भी खूब चांदी काटते हैं. बस मरता है, पिटता है, लुटता है तो सिर्फ आम आदमी.

नीतियाँ- कानून बनाने वालों ने पूंजीपतियों, प्राइवेट कम्पनियों को फायदा पहुंचाने और स्वयं का बैंक बैलेंस बढाने के चक्कर में ऐसी - ऐसी गलत नीतियां बनाईं और कानून को कठपुतली बनाकर देष को नक्सलवाद की गहरी खाई में धकेल दिया है. जो सेना देष के बाहरी दुःष्मनों के लिए है उसे अपने ही देष के नागरिकों से लड़ना पड़ रहा है. आऐ दिन सेना और नक्सलियों के बीच खूनी संघर्श होता रहता है, कभी सैनिक मरते हैं तो कभी नक्सली पर दोनों तरफ से कोई मरे मरते तो भारत माता के बेटे ही हैं. क्षेत्रीय पुलिस प्रषासन की अनदेखी व गलत कार्यवाही से नेताओं व कम्पनियों की अंधी लूट से नक्सलवाद दिन ब दिन बढ रहा है. कुलमिलाकर हम गष्हयुद्ध की तरफ बड़ी तेजी से जा रहे हैं. जो गोला बारूद विदेषी दुःष्मनों के लिए है उसे हम आपसी लडाई में ही बर्बाद कर रहे हैं. नेताओं को सुधरना होगा और कम्पनियों की लूट पर लगाम लगानी होगी, क्षेत्रीय पुलिस प्रषासन की तानाषाही पर भी अंकुष जरूरी है. वरना हम आपस में ही लडते रह जायेंगे और उधर चीन-पाक अपना खेल दिखा चुके होंगे. दिल्ली में बैठे आकाओं का क्या वे तो फकीर हैं, झोला उठायेंगे और उढ जायेंगे इंगलैड-अमेरिका जैसे नीरव, माल्या चले गये.

हमें बचाने किसी मंदिर से कोई भगवान, मस्जिद से अल्लाह, चर्च से गॉड और गुरूद्वारे से गुरूसाहेब नहीं आयेंगे. हमें ही भगत, बिस्मिल, सुभाश, असफाक के पग चिंहों पर चलना पड़ेगा. हम बस अपना परलोक सुधार सकते हैं तरह-तरह के भगवानों से और उसकी भी कोई गारन्टी नहीं है. बेहतर होगा समय रहते हम सुधर जायें, हमारे आका सुधर जायें तो भारत माता बच जाये.

- मुकेष कुमार ऋशि वर्मा
ग्राम रिहावली, डाक तारौली,
फतेहाबाद, आगरा, २८३१११

संपादक के नाम पाती

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखो पर अपने विचार या कोई सुझाव नीचे दिये गये ई-मेल आईडी पर भेज सकते है। स्थान की उपलब्धता के हिसाब से हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।
vsnehsamaj@rediffmail.com

-संपादक

सम्मानित पाठकों अपनी प्रतिक्रियाओं, शिकायतों, सुझावों से हमें अवगत कराते रहे ताकि पत्रिका को निखारने, उपयोगी बनाने में हमें मिल सके. धन्यवाद।

संपादक

प्रेरक प्रसंग

ईमानदारी महान गुण है

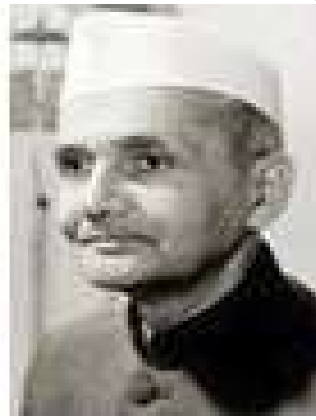

नाव गंगा के इस पार खड़ी है. यात्रियों से लगभग भर चुकी है. रामनगर के लिए खुलने ही वाली है, बस एक-दो सवारी चाहिए. उसी की बगल में एक नवयुवक खड़ा है. नाविक उसे पहचानता है. बोलता है-'आ जाओ, खड़े क्यों हो, क्या रामनगर नहीं जाना है?' नवयुवक ने कहा, 'जाना है, लेकिन आज मैं तुम्हारी नाव से नहीं जा सकता?' क्यों भैया, रोज तो इसी नाव से आते-जाते हो, आज क्या बात हो गयी? आज मेरे पास उतराई देने के लिए पैसे नहीं है. तुम जाओ. अरे! यह भी कोई बात हुई. आज नहीं, तो कल दे देना. नवयुवक ने सोचा, बड़ी मुश्किल से तो माँ मेरी पढ़ाई का खर्च जुटाती है. कल भी यदि पैसे का प्रबन्ध नहीं हुआ, तो कहाँ से दूंगा? उसने नाविक से कहा, तुम ले जाओ नौका, मैं नहीं जाने वाला. वह अपनी किताब, कापियां एक हाथ में ऊपर उठा लेता है और छपाक से नदी में कूद जाता है. नाविक देखता ही रह गया. मुख से निकला-अजीब मनमौजी लड़का है. छप-छप करते नवयुवक गंगा नदी पार कर जाता है. रामनगर के तट पर अपनी किताबें रखकर कपड़े निचोड़ता है. भींगे कपड़े पहनकर वह घर पहुँचता है. माँ रामदुलारी इस हालत में अपने बेटे को देखकर चिंतित हो उठी. अरे! तुम्हारे कपड़े तो भीगें हैं? जल्दी उतारो. नवयुवक ने सारी बात बतलाते हुए कहा, तुम्हीं बोलो माँ, अपनी मजबूरी मल्लाह को क्यों बतलाता? फिर वह बेचारा तो खुद गरीब आदमी है. उसकी नाव पर बिना उतराई दिए बैठना कहाँ तक उचित था? यही सोचकर मैं नाव पर नहीं चढ़ा. गंगा पार करके आया हूँ. माँ रामदुलारी ने अपने पुत्र को सीने से लगाते हुए कहा, **'बेटा, तू जरूर एक दिन बड़ा आदमी बनेगा.'** वह नवयुवक अन्य कोई नहीं लाल बहादुर शास्त्री थे, जो देश के प्रधानमंत्री बने और 18 महीनों में ही राष्ट्र को प्रगति की राह दिखायी.

अगले अंक की परिचर्चा

सोशल मीडियाः अभिशाप या वरदान

अपने विचार पक्ष-विपक्ष में अधिकतम 500 शब्दों में 31 जनवरी 2019 तक भेजे।

अपनी बात

इलाहाबाद बदल रहा है

हमारे इलाहाबाद को लेकर प्रदेश सरकार ने एक वर्ष के अंदर दो महत्वपूर्ण निर्णय लिये. पहला अर्द्धकुम्भ को कुम्भ घोषित कर दिया और इलाहाबाद का नाम बदलकर प्रयागराज कर दिया. प्रयागराज करना कोई बहुत बूरा नहीं है क्योंकि धार्मिक दृष्टिकोण से इसे प्रयागराज के नाम से जाना जाता था. अर्द्ध कुम्भ को कुम्भ नाम देने के बाद धड़ाधड़ केन्द्र एवं राज्य सरकार ने फंड भी जारी कर दिया. थोड़ा बहुत नहीं 3600 करोड़ केवल कुम्भ के मद में आया है और इसके अतिरिक्त सैकड़ों करोड़ अलग से आया. चार ऊपरगामी सेतु अलग बजट से बन रहे थे. यह सूचना पढ़कर ऐसा लगा अब तो इलाहाबाद वास्तव में प्रयागराज (राजा शहर/विकसित शहर/) हो जायेगा. धीरे-धीरे मंद गति से विकास की पंखुड़ीयां अपने कली से फूल बनने की लालसा में हिलोरे मार रही थी. फिर चालू हुआ विकास के साथ विनास का खेल. पुराने शहर से लेकर नये शहर तक पूरा शहर मलवों के ढेर, टूटी फूटी सड़के, बजबजाती नालियां, सड़कों पर बिखरे टूटे हुए मकानों का मलवा. यह सब देखकर ऐसा लगा मानों भूंकप आ गया हो. प्रकृति की अपनी लीला, मानसून का मौसम भी अपने सबाब पर आया. शहर की मुख्य सड़के मौसमी नदियों में और गलियों की सड़के नालों के रूप में दिखाई पड़ने लगी. इलाहाबाद की शांतप्रिय जनता ये सब मौन रहकर देखती रही, आये दिन सड़क की खूबसूरती बढ़ा रहे तीन-तीन, चार-चार फूट के गढढों में स्कूटर/बाईकों का पलटना, कारों का गूं-गूं, गर्र गर्र की आवाज. खैर यह भी दौड़ निकला. खैर जनता इलाहाबाद के ख्याली विकास की ओट लगाये जनता सब समस्याओं से रूबरू होते हुए भी शांत रही. मौसम ने करवट बदली, विकास अपनी कछुआ की चाल से ऊफान पर आने लगा. शहर की मुख्य सड़कें 10 से 20 फीट तक चौड़ी हो गई. अभी एक वर्ष पूर्व बने सड़क विभाजक तोड़कर नये रूप में तैयार होने लगे. सड़के दोनों छोर पर नाली का निर्माण, चौराहों पर छोटे-छोटे पार्क बनने लगे. करते-करते अक्टूबर निकल गया. मुख्यमंत्री जी ने 15 नवम्बर तक का समय दिया, निकल गया, नगर विकास मंत्री, उपमुख्यमंत्री, प्रमुख सचिव विकास कार्य की निगरानी करने लगे. धीरे-धीरे कुम्भ मेला आने में मात्र 15 दिन शेष बचा. शायद आप तक यह अंक पहुंचते-पहुंचते मेला शुरू भी हो जाए. साधू-संतो का डेरा जमने लगा, माननीय प्रधानमंत्री जी भी आये उद्घाटन करके चले गये. पर विकास कार्य पूरा होने की अंतिम तिथि दलित, जाट, मुसलमान बाल ब्रह्मचारी हनुमान जी की पूंछ की तरह समाप्त होने का नाम ही नहीं ले रही है. विकास कार्यो की गति को देखकर तो ऐसा लगता है कि ये भी लोकसभा चुनाव के बाद अगली केन्द्र सरकार का बाट जो रहे है. और अगर इसके पूर्व कहीं दो-तीन अच्छी बरसात हो गई तब तो विकास पूरा होने की बात ही खत्म हो जाएगी तब हमें लालटेन लेकर विकास को ही ढूढना पड़ेगा. कहां गया तू तूझे ढूढू मैं.........इसके लिए स्थानीय प्रशासन पूरी तरह कमर कसकर तैयार बैठा है. बहु प्रचारित/प्रसारित अर्द्धकुम्भ/कुम्भ के क्षेत्र की बात करे तो कागज पर पूरा मेला क्षेत्र सेक्टर, उपसेक्टर में बटा हुआ है लेकिन धरातल पर देखे तो आप दिन में टार्च लेकर ढूढते रहो, पूछते रहो कोई बताने को तैयार नहीं है कि कौन सा विभाग कहां है, कौन सा सेक्टर किधर है, कौन सी सड़क किधर है? पुलिस प्रशासन से लेकर विशेष रूप से कुंभ मेला के लिए गठित मेला प्राधिकरण तक को पता नहीं है. आम आदमी की तो बात ही छोड़िये. ऐसे कुम्भ के लिए हमारे प्रधानमंत्री जी, मुख्यमंत्री जी विदेशी सैलानियों से लेकर, दूसरे राज्यों के राज्यपालों/मुख्यमंत्रियों को आमंत्रण देने के लिए पूरा उत्तर प्रदेश मंत्रालय निकला हुआ है. ऊपर से यह मेला जिला खूबसूरत दिखाया जा रहा है उसका पचास प्रतिशत भी धरातल पर होता तो दिल बाग-बाग हो जाता. फिर इलाहाबाद जो कुछ दिनों से प्रयागराज हो गया है. लोगों को कहना पड़ेगा कि माननीय मुख्यमंत्री मुझे कम से कम मेरा पूराना इलाहाबाद ही लौटा दो, पूराना 12 वर्ष पर कुम्भ, 6 वर्ष पर अर्द्धकुम्भ ही ठीक था. 3600 करोड़ में लोकसभा चुनाव तो निपट ही जाऐंगे आपके, अभी विधानसभा चुनाव बाकी है तब तीन साल पर अर्द्ध कुम्भ लगवा लेना. मुझे इलाहाबादी अमरूद, इलाहाबादी तहजीब, इलाहाबादी विकास ही पसंद है यह प्रयागराज का विकास, स्मार्ट सिटी, स्वच्छ सिटी का ख्वाब नहीं देखना.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

महाभारत से जुड़े

■ न जाने किसने यह प्रचारित कर दिया कि महाभारत पुस्तक घर में रखने और पढ़ने से घर में अशान्ति और झगड़े होने लगते है.

■ हमारा देश यदि कृष्ण को समझा होता और महाभारत की शिक्षाओं पर चला रहा होता तो हम इस भाँति नपुंसक न हो गये होते. हमने अच्छी-अच्छी बातों के पीछे कई कुरूपतायें छिपा रक्खी है. हमारी अहिंसा की बात के पीछे हमारी कायरता छिपकर बैठ गई.

-रघुनाथ प्रसाद सराफ, मुंबई, महाराष्ट्र

'महाभारत' वस्तुतः अधर्म पर धर्म की विजय का इतिहास है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त करने तथा राष्ट्र में शान्ति, विकास एवं व्यवस्था स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त करता है. भारत की सनातन संस्कृति का विशालतम कोष है 'महाभारत'. वेद-वेदाक से, पुराणों से एवं अन्य धर्मशास्त्रों के अध्ययन से जो ज्ञान प्राप्त होता है, वह अकेले इस ग्रन्थ के अध्ययन से प्राप्त हो सकता है. जिस प्रकार समुद्र और हिमालय पर्वत दोनों को ही रत्नाकर कहा गया है, उसी प्रकार यह ग्रन्थ भी उपदेश-रत्नों की खान कहा जाता है.

न जाने किसने यह प्रचारित कर दिया कि महाभारत पुस्तक घर में रखने और पढ़ने से घर में अशान्ति और झगड़े होने लगते है. हमने भी भ्रमित होकर इसे सत्य मान लिया. ऐसा घिनौना भ्रम हिन्दु समाज के विरूद्ध किसी षड़यन्त्र का परिणाम है या हमारी कायरता का, अथवा हमारी पलायनवृत्ति की उपज है- कहना कठिन है. फिर भी, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि अपने पूर्वज-ऋषियों के संचित ज्ञान की ऐसी उपेक्षा और ऐसा अनादर शायद ही किसी अन्य जाति द्वारा किया जाता हो! इसका परिणाम हम भुगत भी रहे है.

आचार्य रजनीश 'ओशो' का कथन है- "मेरा तो दृढ विश्वास है कि यदि भारत में भागवत कथाओं की भाँति महाभारत की कथाएँ भी आयोजित की जाती और भारतीय जनमानस महाभारत के सन्देश को आत्मसात् कर लेता तो

इस हमारे देश का कदापि पराभव नहीं होता." वस्तुतः महाभारत इस देश की राष्ट्रीय ज्ञान संहिता है. ज्ञान और विज्ञान का भण्डार है.

पुरूषार्थः शताब्दियों के अनुभव-चिन्तन मनन के आधार पर विकसित हमारी जीवन-शैली को 'भारतीय संस्कृति' कहा जा सकता है. ऋषियों द्वारा इस जीवन पद्धति के चार पक्ष निर्धारित किये गए थे जिन्हें मनुष्यों द्वारा किये गये सुकर्म अर्थात 'पुरूषार्थ' कहा गया कि उनसे चार उत्तम परिणाम (फल) प्राप्त होते रहते हैं. रामायण में कहा गया-

जो दायकु फल चारि।

1-धर्मः कर्तव्य पालन में संलग्नता एवं निष्ठा; 2-अर्थः अर्थोपार्जन द्वारा सुशासन एवं राष्ट्र की सुरक्षा हेतु मानसिकता; 3-कामः कामनाओं अथवा काम का अनुशासित उपभोग; 4-मोक्षः मिथ्या बन्धनों को नकारते हुए मुक्त जीवन जीने की चेष्टा.

मनुष्यत्वः भारतवंश के इतिहास तथा अन्य अनेक कथानकों के माध्यम से, चारो ही प्रकार के फल देने वाले मानवीय पुरूषार्थों को केन्द्र मानकर, वैदिक युग से निरन्तर प्रवाहित भारतीय संस्कृति का दिग्दर्शन कराया गया है. इनमें कहीं मानवीय दुर्बलताओं का चित्रण है तो कहीं उदात्तम भावनाओं का दर्शन. वेदव्यास का सम्पूर्ण चिन्तन मनुष्यों के द्वारा किए जा सकने वाले कल्याणकारी कर्मों पर ही केन्द्रित है। वे कहते हैं-'न मानुषात् श्रेष्ठतरं हि

किंचित्' अर्थात संसार में मनुष्य से अधिक कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है.

शस्त्र और शास्त्रः निस्सन्देह इस ग्रन्थ में युद्ध तथा अस्त्र-शस्त्रों का भयंकर वर्णन है. लेकिन हमें ध्यान में रखना चाहिये कि 18 पर्वो में से युद्ध का वर्णन इसके मात्र चार पर्वों में ही है. युद्ध भी कैसा? जो केवल सूर्योदय से सूर्यास्त तक किया जाता था तथा सामान्यतः निर्धारित नियमों के अनुसार ही किया जाता था. यह धर्मयुद्ध था हमारी नजरों से यह महत्वपूर्ण तथ्य भी ओझल हो गया कि महाभारत ही सम्भवतः एक मात्र ग्रन्थ है, जिसमें शस्त्र और शास्त्र दोनों को समान महत्व दिया गया है. स्वस्थ एवं सार्थक जीवन के लिये शास्त्रों का महत्व सभी जानते हैं; लेकिन राष्ट्र की सुरक्षा शास्त्रों एवं शौर्य से ही संभव है. ऐसा माना जाता है कि शास्त्रों तथा युद्ध की चर्चा से व्यक्ति का शौर्य एवं आत्मबल जागृत रहता है. अन्यथा, क्या कारण है कि हमारे राष्ट्रीय पर्वो पर हमारे सैन्य बल और शास्त्रों का प्रदर्शन किया जाता है? वर्तमान परिस्थितियों में तो हमें इस तथ्य पर और भी तत्परता से ध्यान देना ही चाहिये.

अहिंसाः इस ग्रन्थ में युद्ध और शस्त्रों का विशद् वर्णन होते हुए भी, यह ग्रन्थ हिंसा का पक्षधर नहीं है. 'अहिंसा परमोधर्मः' का उद्घोष सर्व प्रथम महाभारत ग्रन्थ में ही हुआ है. महानायक श्री कृष्ण कहते हैं कि जो अहिंसा युक्त है वही वास्तविक धर्म है.

पापः महाभारत में मानव जाति की एक और दुर्बलता का उल्लेख मिलता है. यह मनोवैज्ञानिक दुर्बलता है. दुर्योधन कहता है 'मैं धर्म को जानता हूँ लेकिन इसमें मेरी प्रवृत्ति नहीं हो रही है. मैं अधर्म (पाप) को भी समझता हूँ लेकिन इसे छोड़ नहीं पा रहा हूँ.' ऐसा भी अनुभव में आता है कि कभी-कभी मनुष्य न चाहते हुए भी पाप का आचरण करने लगता है. श्रीकृष्ण ने (गी० 3/37–43) में इस विकट प्रश्न का सटीक उत्तर दिया. काम रूपी शत्रु का दम नही इसका उपचार हैं क्योंकि काम मनुष्य को अंधा (ज्ञान से शून्य) बना देता है. इसी क्रम में देश व काल के सन्दर्भ में कहा गया कि कभी-कभी 'धर्म' अधर्म दिखने लगता है तथा जो पाप कर्म है वह धर्म प्रतीत होने लगता है-**'भवत्य धर्मो धर्मो हि धर्मा धर्मावु भावपि। कारण देशकालस्य देशकालः स तादृशः।।'** इस प्रकार विभिन्न कथानकों तथा पात्रों के माध्यम से पाप व पुण्य का जैसा सूक्ष्म एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण महाभारत में किया गया, वैसा अन्यत्र देखने में नहीं आता है.

धर्मः धर्म के प्रायः सभी अंगों का इसमें वर्णन है. वर्णाश्रम धर्म, राजधर्म, आपद्धर्मा, दानधर्म, स्त्रीधर्म आदि विविध धर्मों का शान्तिपर्व एवं अनुशासन पर्व में भीष्म द्वारा बहुत विशद् वर्णन किया हुआ है. धर्म भारतीय् चिन्तन की एक विशिष्ट अवधारणा है जो विश्व की किसी भी अन्य दर्शन में नजर नहीं आती है. ऋषियों द्वारा समय पर धर्म को परिभाषित करने के प्रयास किये जाते रहे हैं. इन प्रयासों की लम्बी श्रृंखला में, महाभारत ने ही संभवतः सबसे पहले धर्म की एक सार्वकालिक परिभाषा प्रस्तुत की हैं-'प्रजा अथवा समाज को धारण करने वाले नियमों व गुणों को धर्म कहते हैं...**धारणात् धर्म इत्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः।**' इसी क्रम में महाभारत आश्वस्त करता है कि धर्म का पालन करने वालों की धर्म रक्षा करता हैं-**धर्मों रक्षति रक्षितः।** आज स्थिति यह दिखाई देती है कि जो व्यक्ति धर्म के किंवा समाज के नियमों का पालन करते हैं वे कष्ट से पिसते रहते हैं और इनका उल्लंघन करने वाले फलते फूलते रहते हैं. यह परिदृश्य नया नहीं है. महाभारत काल में भी, द्रौपदी पूछती है कि यदि धर्म के संबंध में यह मान्यता सही है तो धर्म का आचरण करने वाले पाण्डवों की रक्षा धर्म क्यों नहीं करता है? ऐसे सार्वकालिक नैतिक द्वन्द्व का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण जैसा महाभारत में उपलब्ध है वैसा शायद ही कहीं अन्यत्र हो!

वस्तुतः धर्म 'पर हित' में ही निहित है. महाभारत में कहीं भी तथाकथित पूजा-अर्चना, व्रत-उपवास, तीर्थाटन आदि को धर्म की संज्ञा नहीं दी है. इन कर्मों में लीन रहने वालों को जब से हमने 'धार्मिक' मान लिया, वहीं से हमारी दुर्गति का प्रारम्भ हो गयी. अपने अपने इष्ट की पूजा-अर्चना करना, उनकी याद में भजन-कीर्तन करना और उनके विग्रहों के दर्शनार्थ घर से बाहर निकलना- ये सब निजि-उपासना है जिनसे व्यक्ति को उनसे संबंध प्रगाढ़ करने में सहायता मिलती है. भोजन का मोह छोड़ कर पेट को आराम देना स्वास्थ्य में सहायता मिलती है. भोजन का मोह छोड़कर पेट को आराम देना स्वास्थ्य के लिये हितकारी है। अन्यथा, इनके दिखावे में समाज की कुछ भी भलाई नहीं है. इनके बड़े-बड़े अनुष्ठान-आयोजन अहंकार एवं पाखण्ड के द्योतक ही कहे जाएँगे.

वर्णाश्रम धर्मः महाभारत में चारों वर्णो एवं चारों आश्रमों के नाम से मनुष्य की प्रत्येक भूमिका में उसके कर्त्तव्यों का विस्तार से निरूपण किया गया हैं जीवन की इस व्यवस्था में आज कुछ विकृतियाँ तथा जातीय कट्टरता आजाने के कारण वर्तमान पीढ़ी ने इसे यद्यपि नकार सा

दिया हो तथापि हमारे दैनन्दिन जीवन में हम किसी न किसी रूप में और किसी न किसी काल खण्ड में चारो वर्णों-ब्राह्मण(मार्गदर्शक), क्षत्रिय(शासक एवं सैनिक), वैश्य(व्यापार-कृषि द्वारा पोषण करने वाले), शूद्र(अकुशल कर्मचारी) का सहयोग और चारों आश्रमों-ब्रह्मचर्य (विद्याध्ययन), ग्रहस्थ(धनोपार्जन एवं दान), वानप्रस्थ(सेवानिवृत्ति) तथा सन्यास(पूर्ण निवृति) के दायित्वों का निर्वाह करते रहते हैं. अतः यह आज भी प्रासंगिक है.

यह बात अलग है कि महाभारत में कहीं-कहीं बहुत कठोर नियमों का भी उल्लेख है जिनका पालन आज के संदर्भ में अत्यन्त कठिन है. अब, यह हमारे विवके पर निर्भर है कि हम, नियमों का कितना पालन करते हैं अथवा करना चाहते हैं.

धर्मोपदेशक कौनः यह प्रश्न विचारणीय है कि 'धर्म' की शिक्षा किससे ली जा सकती है? वर्तमान परिदृश्य में देखें तो लगता है कि यह एकाधिकार मानों विभिन्न सम्प्रदायों के धर्मगुरूओं का, सन्त-महात्माओं का और कथा-वाचकों का ही है. प्राचीनकाल में भी सम्भवतः यही स्थिति रही हो. किन्तु महाभारत में एक क्रान्तिकारी बात नजर आती है. इसमें धर्म संबंधी ज्ञान पर किसी वर्ण आदि का एकाधिकार नहीं बताया गया है. उदाहरणतः एक प्रसंग में सिद्धि प्राप्त महात्मा 'कोशिक' को धर्म का अर्थ समझने के लिए मिथिला में मांस बेचकर जीवन यापन करने वाले व्याध के पास जाने के लिए कहा जाता है तथा एक अन्य कथा में, एक तपस्वी ब्राह्मण 'जाजलि' को अनाज बेचने वाले वैश्य से धर्म का मर्म जानने की सलाह दी जाती है. इस प्रकार महाभारत के व्यापक दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा किसी से भी ग्रहण की जा सकती है.

महापुरूषों का अनुकरणः मनुष्य को क्या करना चाहिए और क्या नहीं, इस प्रश्न पर बड़े-बड़े विद्वान् भी भ्रमित हो जाते है. महाभारत ने सामान्य व्यक्तियों के लिए धर्म (कर्त्तव्य) की शास्त्रीय व्याख्या के पचड़े की बजाय 'महापुरूषों' का अनुकरण करने पर जोर दिया-

तर्कोंडप्रतिष्ठः श्रुतियों विभिन्ना नैको ऋषिर्यस्य वचः प्रमाणम्।
धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायाम् 'महाजनों येन गतः स पन्थाः।। (वनपर्व)

धर्म का मूल स्वरूप शाश्वत एवं सार्वदेशिक होते हुए भी, इसे महाभारत में देश और काल की परिस्थितियों के अनुरूप व्याख्यायित किया गया है. महाभारत की यही विलक्षणता है कि इसमें कहीं कट्टरता नहीं है. सर्वत्र खुला चिन्तन दिखाई देता है. कहा गया कि यह लोक मनुष्यों की कर्मभूमि होने के कारण इसे अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देखकर समझने वाला व्यक्ति ही सर्वदर्शी बन सकता है-प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेन्नरः।

सत्य-असत्यः धर्म का रहस्य बताते हुए कृष्ण कहते है कि सत्य बोलना उत्तम है. सत्य से बढ़कर कुछ भी नहीं है-न सत्याद् विद्यते परम् (कर्णपर्व)। लेकिन, सत्य के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना अत्यन्त कठिन होता है. इसीलिए जहाँ सत्य बोलने का परिणाम असत्य भाषण के समान 'अनिष्टकारी' हो अथवा जहाँ मिथ्या बोलने का फल सत्य बोलने के समान मंगलकारी हो, वहाँ सत्य नहीं बोलना चाहिए- वहाँ तो असत्य बोलना ही उचित होगा-

भवेत् सत्यमवक्तव्यं वक्तव्यमनृतं भवेत्। यत्रानृतं भवेत सत्य, सत्यंचापिडनृतं भवेत्।। (कर्ण पर्व एवं शान्ति पर्व)

जातियों का आधारः सामाजिक संरचना के संदर्भ में 'महाभारत' ने जातियों का आधार जन्मना न मानते हुए चारों वर्णों के पृथक-पृथक स्वभाव, कर्म तथा गुणों का स्पष्ट उल्लेख किया है. इन्हीं के अनुसार वर्णों का विभागीकरण किया है. इस प्रसंग में युधिष्ठिर का कथन है कि जिसमें सत्य, दान, क्षमा, सुशीलता, क्रूरता का अभाव, तपस्या और दया-ये सद्गुण हैं वहीं ब्राह्मण है. जाति निर्धारण में शील (आचरण) ही प्रधान है.

राजधर्मः महाभारत अर्थशास्त्र भी माना जाता है क्योंकि इसका सम्पूर्ण कथानक राजधर्म तथा अर्थव्यवस्था पर भी केन्द्रित है. इसमें अनेक प्रसंगों के माध्यम से, विशेषतया शान्ति-अनुशासन एवं आश्वमेधिक पर्वो में सभासदों के लक्षण व कर्तव्य, राजोचित शिष्टाचार, प्रजा के अभ्युदय हेतु राजा (सुशासन) की आवश्यकता, राष्ट्र की रक्षा, राजा के कर्त्तव्य, राजा के लिए विद्वान सलाहकार की आवश्यकता, युद्ध नीति, सैन्य संचालन की विधि, योद्धाओं के लक्षण, दण्डनीति, दण्ड का स्वरूप, राष्ट्र की वृद्धि के उपाय तथा गुप्तचर व्यवस्था आदि का बड़ा विशद् विवेचन प्रस्तुत किया गया है.

गुप्तचर व्यवस्था पर महाभारत का सन्देश है कि शासक को अपने मन्त्रियों, मित्रों तथा पुत्रों पर भी गुप्तचर नियुक्त करने चाहिये. गुप्चरों द्वारा बाजारों, घूमने -फिरने के स्थानों, सामाजिक उत्सवों, भिक्षुओं के समुदायों, बगीचों, विद्वानों की सभाओ, चौराहों और धर्मशालाओं पर नजर रखनी चाहिये। पाखण्डी एवं तपस्वी वेश में गुप्तचर बदलते रहना चाहिए. साथ ही, जिन पर आम तौर पर सन्देह न हो, उन पर विशेष रूप से नजर रखनी आवश्यक है.

इसी प्रसंग में धृतराष्ट्र के एक मन्त्री कणिक की नीति विशेष रूप से ध्यान

देने योग्य है. कणिक राजनीति में निष्णात् माने जाते है. उनका कहना कि राजा (शासक) का कर्तव्य है कि शासन में शिथिलता न आने देवे. यदि किसी कारण से कमजोरी आ भी जावे तो उसे गुप्त रखे.

महाभारत के अनुसार राजा (शासक) का प्रथम कर्त्तव्य है कि वह अपने मन पर विजय प्राप्त करे.

दण्ड नीतिः यदि संसार में दण्ड की व्यवस्था न होती तो सब लोग एक दूसरे को मार डालते. दण्ड के भय से ही मनुष्य आपस में मारकाट नहीं मचाते है. जगह-जगह यह दोहराया गया है कि शासन व दण्ड में शिथिलता से ही अपराध वृत्ति बढ़ती है।

एक अत्यन्त चौकाने वाली कथा है. इसके अनुसार जब द्वारका का शासक -वर्ग स्वयं ही मद्यन्ध एवं उच्छदृंखल होकर अपराध करने लगा तो कृष्ण जैसे समर्थ राजनीतिज्ञ को भी उन्हें ही समाप्त करना पड़ा. तात्विक दृष्टि से देखें तो कृष्ण वस्तुतः समष्टि के प्रतीक हैं, वे केवल द्वाराकाधीश ही नहीं है. अतः आज यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि शासक वर्ग जब जब भ्रष्ट हो जाए तब शीघ्र ही जनता (समष्टि) द्वारा उन्हें सत्ता से मुक्त (च्युत) करते रहना चाहिए.

विदेश नीतिः शत्रु-देष के साथ किये जाने वाले व्यवहार का निरूपण करते हुए महाभारत में कहा गया है कि शत्रु को कभी कमजोर नहीं समझना चाहिए. इसी के साथ यह भी निर्देश है कि शत्रु को समाप्त करना शुरू कर देने पर बीच में रूकना नही चाहिए. शत्रु यदि शरणागत भी हो जाए तो भी उस पर दया नही करनी चाहिए. इतिहास गवाह है कि पूर्व में हमने ऐसी गल्तियाँ की है. गजनी के सुलतान गौरी को हमारे सम्राट पृथ्वीराज चौहान ने सत्रह बार जीवन दान दे दिया था.

कूटनीति के अन्तर्गत यदि समय अनुकूल न हो तो शत्रु को कन्धे पर भी ढोया जा सकता है, किन्तु अवसर मिलते ही उसे घड़े की तरह फोड़ देना चाहिए. सौभाग्य है हमारा कि हमारा शासकदल इस कूटनीति को समझने लगा है.

अध्यात्मः प्राणियों की उत्पत्ति और प्रलय के आठ स्थान अर्थात पाँच महाभूत- पृथ्वी, वायु, आकाश, जल, अग्नि-छमा मन, सातवी वृद्धि और आठवाँ निश्चय करती है और क्षेत्रज्ञ साक्षी की भाति स्थिर (तटस्थ) रहता है. अतः कहा गया कि पुरूषों (मनुष्यों) को अपनी इन्द्रियों की परीक्षा करके उनकी जानकारी रखते रहना चाहिए.

मनुष्य को सुख दुःख में समता का भाव एवं सब जीवों के प्रति समान भाव रखना यह अध्यात्म के ज्ञान से पुष्ट पुरूष का व्यवहार रूप परिचय है.

कामः काम के स्वरूप और काम की वष्तियों का महाभारत में अनेक कथाओं एवं उनके पात्रों के माध्यम से अत्यन्त मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है जो आज भी उतना ही प्रासंगिक प्रतीत होता है. रसपूर्ण एवं भावनात्मक साहित्य की दृष्टि से (आदि पर्व में) नल-दमयन्ती एवं सत्यवान-सावित्री जैसे अनेक हृदयग्राही आख्यान उपाख्यान है, जिन पर आधारित अनेक उत्कष्ट साहित्यिक ग्रन्थों की रचना हो चुकी है.

इनके अतिरिक्त सृष्टि विज्ञान, ज्योतिष, भूगोल, खगोल शास्त्र, काल का स्वरूप, राजवंशों का इतिहास, सामजशास्त्र, इतिहास की व्याख्या आदि अनेक विविध विषयों का निरूपण महाभारत में किया गया है. यह सत्य है कि ऐसे वर्णन अन्यत्र भी उपलब्ध हो सकते हैं किन्तु वेदव्यासजी जो महाभारत ग्रन्थ के रचनाकार हैं, उनका कथन है कि 'जो कुछ इसमें नहीं है वह अन्य किसी दूसरे ग्रंथ में भी नहीं मिलेगा-

यन्नेहास्ति न कुत्रचित्।

गीतापदेशः 'श्रीमतद्भगवद्गीता' भी महाभारत का ही एक अंश हैं इसका समावेश (वर्णन) भीष्म पर्व में हुआ है। पृथक रूप से भी गीता जनमानस में राष्ट्रीय ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित है. अतः इस आलेख में गीता पर चर्चा करना आवश्यक नही है. 'गीता' के अतिरिक्त भी महाभारत में 12 अन्य गीताएँ हैं. इनमें विदुरगीता विशेषरूप से उल्लेखनीय है. विदुरगीता में व्यक्तित्व के विकास हेतु अद्भुत सूत्र दिये गये है. आठ बड़े-बड़े अध्यायों में, उद्योग पर्व में अन्तर्गत, इन सूत्रों का वर्णन किया गया है. कतिपय बोधप्रद (सात) सुक्तियों उदाहरणार्थ यहाँ दी जा रही है-

एक विषरसों हन्ति शस्त्रेणैकन्ध वध्यते।
सराष्ट्रं सप्रजं हन्ति राजानं मन्त्रविप्लवः।।

भावार्थः विष का रस एक को ही मारता है, शस्त्र से किसी एक का ही वध होता है, किन्तु (गुप्त) मन्त्रणा का प्रकाशन होना राष्ट्र, प्रजा और राजा का भी विनाश करता है.

ऐश्वर्य या उन्नति चाहने वाले पुरूषों (मनुष्यों) को नींद, तन्द्रा, डर, क्रोध, आलस्य तथा दीर्घसूत्रता- इन छः दुगुर्णों को त्याग देना चाहिए.

वाणों बिंधा हुआ तथा फरसे से काटा हुआ वन (वृक्ष) भी पुनः अंकुरित हो जाता है, किन्तु कटु वचन कहकर वाणी से किया हुआ घाव नहीं भरता.

आठ गुण मनुष्य की शोभा बढ़ाते हैं- बुद्धि, कुलीनता, दम, शास्त्र, पराक्रम, बहुत न बोलना, यथाशक्ति दान देना और कृतज्ञ होना.

सदा प्रिय वचन बोलने वाले मनुष्य तो सहज में ही मिल जाते हैं, किन्तु जो

अप्रिय लगता हुआ भी हितकारी हो, ऐसे वचन के वक्ता व श्रोता दुर्लभ है. कुछ लोग गुण से समृद्ध होते हैं और कुछ लोग धन से. जो धन के धनी होते हुए भी गुणों से शून्य हैं, उन्हें सर्वथा त्याग दीजिये.

जो विश्वास का पात्र नहीं है, उसका तो विश्वास करें ही नहीं, किन्तु जो विश्वासपात्र है, उस पर भी अधिक विश्वास न करे. विश्वास से जो भय उत्पन्न होता है, वह मूल का भी उच्छेद कर डालता है.

कृष्ण को समझें: 'शान्ति' से शुभ फलित होता है तो स्वागत है. 'युद्ध' से शुभ फलित होता होता हो, जिससे जीवन में आनन्द की संभावना बढ़ती हो, उसका स्वागत है.

हमारा देश यदि कृष्ण को समझा होता और महाभारत की शिक्षाओं पर चलता रहा होता तो हम इस भाँति नपुंसक न हो गये होते. हमने अच्छी-अच्छी बातों के पीछे कई कुरूपतायें छिपा रक्खी है. हमारी अहिंसा की बात के पीछे हमारे हमारी कायरता छिपकर बैठ गई. हमारे युद्ध-विरोध के पीछे हमारे मरने का डर छिपकर बैठ गया. हमारे युद्ध न करने से भी युद्ध बन्द नही हुए. युद्ध न करने से हम गुलाम बने रहे और दूसरी दूसरी लड़ाइयों में घसीटे जाते रहे. गुलाम बनकर हम दूसरों की फौजों के लिए लड़ते रहे. कभी मुगल की फौज में लड़े, कभी तुर्क की फौज में लड़े फिर हम अंग्रेजों की फौज में लड़े. लड़ाई तो बन्द नहीं हुई. हम अपनी स्वतन्त्रता, अपने जीवन के लिए नहीं लड़े, फिर भी हमारा आदमी मरता रहा. यह, महाभारत के कारण नहीं हुआ, हम अपने में महाभारत की हिम्मत न जुटा पाये, उसके कारण से हुआ.

कृष्ण जैसे व्यक्तित्व को सम्पूर्ण सहयोग देने की जरूरत है. जो कहे कि शुभ को भी लड़ना चाहिये, तलवार हाथ में लेने की हिम्मत रखनी चाहिये. निश्चित ही शुभ जब तलवार हाथ में ले लेता है तब किसी का अशुभ नहीं हो पाता. यह लड़ने के लिए लड़ाई नहीं है, लेकिन अशुभ (ना-पाक) जीत न पावे, इसलिए लड़ाई है.

हमारे यहाँ अच्छे लोगों की और अच्छाई की कोई कमी नहीं है. लेकिन, अच्छे आदमियों की एक लम्बी कतार ने इस मुल्क के मन को सिकोड़ दिया और हमने ही बुलाया, हमने ही आमान्त्रित किया कि आओ. हमारे ऐसे बुलावे के कारण बहुत लोग आये- उन्होनें हमें वर्षों तक गुलाम बनाये रखा. अपनी मौज से वे चले भी गये. लेकिन अभी भी, हमारे मनोदशा संकोच की ही बनी रही तो हम फिर किसी को बुला सकते है.

कृष्ण की वाणी हमें श्रेष्ठ-मुख से पुकार रही है. इस हमारे देश को कृष्ण पर पुनः गम्भीर चिन्तन करना ही होगा. महाभारत की कथाओं के निहितार्थ व सन्देश को समझना आवश्यक है.

प्रदेश के सभी प्रधान डाकघरों से होगी एलईडी बल्ब, ट्यूबलाइट और पंखों की बिक्री

अब डाकघर बिजली बचाने में भी योगदान देंगे. डाक घरों से अब एलईडी बल्ब, ट्यूबलाइट और पंखों की भी बिक्री की जाएगी. डाक विभाग इसे भारत सरकार की 'उजाला' योजना के तहत क्रियान्वित करेगा. उत्तर प्रदेश के चीफ पोस्टमास्टर जनरल श्री वीपी सिंह ने इसका शुभारम्भ लखनऊ जीपीओ में विश्व डाक दिवस पर आयोजित एक कार्यक्रम में विभिन्न ग्राहकों को एलईडी बल्ब सौंपकर किया.

इस अवसर पर श्री वीपी सिंह ने कहा कि यह डाक विभाग की ऊर्जा संरक्षण के अंतर्गत की गई पहल है, जिससे लोगों को काफी फायदा होगा. प्रारम्भिक स्तर पर प्रदेश के प्रधान डाकघरों व मुख्य डाकघरों से इसकी बिक्री आरम्भ की जाएगी, जिसे चरणबद्ध रूप में अन्य डाकघरों तक भी ले जाया जायेगा. लखनऊ (मुख्यालय) परिक्षेत्र के निदेशक डाक सेवाएँ श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि डाक विभाग ने टेक्नालाजी के साथ अपने को अपडेट करते हुये कस्टमर-फ्रेंडली सेवाओं का दायरा बढ़ाया है और यह सेवा भी उसी कड़ी का अंग है. इसके तहत एलईडी बल्ब 70 रूपये, ट्यूबलाइट 220 रूपये और पंखा 1110 रूपये के किफायती मूल्य पर डाकघरों द्वारा उपलब्ध कराया जायेगा. फ़िलहाल इसकी शुरुआत बल्ब से की गई है और शीघ्र ही ट्यूबलाइट और पंखे भी बिक्री हेतु उपलब्ध कराये जायेंगे.

इस अवसर पर निदेशक मुख्यालय श्री राजीव उमराव, चीफ पोस्टमास्टर लखनऊ जीपीओ योगेन्द्र मौर्य सहायक निदेशक आर. एन यादव, भोला सिंह, डिप्टी चीफ पोस्टमास्टर एमपी मिश्र, टीपी सिंह डाक निरीक्षक कोमल दयाल सहित तमाम विभागीय अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे.

क्या नग्नता आधुनिकता का प्रतीक है

- क्या लड़कियां खुद पुरुषों को भाई/पिता की नज़र से देखती है?
- वो सोच क्यों बदले? आपने लोगों की सोच बदलने का ठेका लिया है क्या?
- हत्या, डकैती, चोरी, बलात्कार, आतंकवाद इत्यादि सबको लेकर सोच बदली जाये, सिर्फ नग्नता को लेकर ही क्यों?
- लड़किया/महिलाएं कहती है कि हमें आज़ादी है हम क्या पहनेगे, पुरुष नहीं?

-नीलम कपूर

लड़कियों के अनावश्यक नग्नता वाली पोशाक में घूमने पर जो लोग या स्त्रीया ये कहती है कि कपड़े नहीं सोच बदलो उन लोगों से मेरे कुछ प्रश्न है:-

■ वो सोच क्यों बदले? सोच बदलने की नौबत आखिर आ ही क्यों रही है? आपने लोगों की सोच का ठेका लिया है क्या?

■ आप उन लड़कियों की सोच का आकलन क्यों नहीं करते. उसने क्या सोचकर ऐसे कपड़े पहने की उसके छुपाने वाले अधिकांश अंग दिखाई दे रहे है. इन कपड़ों के पीछे उसकी सोच क्या थी? एक निर्लज्ज लड़की चाहती है की पूरा पुरुष समाज उसे देखे. वही एक सभ्य लड़की बिलकुल पसंद नहीं करेगी की कोई उसे देखे.

■ अगर सोच बदलना ही है तो क्यों न हर बात को लेकर बदली जाए. आपको कोई अपनी ऊँगली का इशारा करे तो आप उसे गलत मत मानिए, सोच बदलिये. वैसे भी ऊँगली में तो कोई बुराई नहीं होती. आपको कोई गाली दे तो उसे गाली मत मानिए. उसे प्रेम सूचक शब्द समझिये.

■ हत्या, डकैती, चोरी, बलात्कार, आतंकवाद इत्यादि सबको लेकर सोच बदली जाये, सिर्फ नग्नता को लेकर ही क्यों?

■ कुछ लड़किया कहती है कि हम क्या पहनेगे ये हम तय करेंगे. पुरुष नहीं. जी बहुत अच्छी बात है. आप ही तय करें. लेकिन पुरुष भी किस लड़की का सम्मान/मदद करेंगे ये भी वो तय करेंगे. स्त्रीया नहीं? और वो किसी का सम्मान नहीं करेंगे इसका अर्थ ये नहीं कि वो उसका अपमान करेंगे.

■ फिर कुछ विवेकहीन लड़किया कहती है कि हमें आज़ादी है अपनी ज़िन्दगी जीने की.....जी बिल्कुल आज़ादी है. ऐसी आजादी सबको मिले, व्यक्ति को चरस, गांजा, ड्रग्स, ब्राउन शुगर लेने की आजादी हो. गाय-भैंस का मांस खाने की आजादी हो. वेश्यालय खोलने की आजादी हो. पोर्न फ़िल्म बनाने की आजादी हो. हर तरफ से व्यक्ति को आज़ादी हो.

■ फिर कुछ नास्तिक स्त्रीयां कुतर्क देती है कि जब नग्न काली की पूजा भारत में होती है तो फिर हम औरतों से क्या समस्या है?

पहली बात ये कि काली से तुलना ही गलत है. और उस माँ काली का साक्षात्कार जिसने भी किया उसे उसे लाल साड़ी में ही देखा. माँ काली तो शराब भी पीती है... तो क्या तुम

बेवड़ी लड़कियों की पूजा करोगी, काली तो दुखों का नाश करती है. तुम लड़किया तो समाज में समस्या जन्म देती हो और काली से ही तुलना क्यों? सीता पार्वती से क्यों नहीं? क्यों न हम पुरुष भी काल भैरव से तुलना करें जो रोज कई लीटर शराब पी जाते है. शनिदेव से तुलना करे जिन्होंने अपनी सौतेली माँ की टांग तोड़ दी थी.

लड़कों को संस्कारों का पाठ पढ़ाने वाला कुंठित स्त्री समुदाय क्या इस बात का उत्तर देगा कि क्या भारतीय परम्परा में ये बात शोभा देती है कि एक लड़की अपने भाई या पिता के आगे अपने निजी अंगो का प्रदर्शन बेशर्मी से करे. क्या ये लड़किया पुरुषों को भाई/पिता की नज़र से देखती है. जब ये खुद पुरुषों को भाई/पिता की नज़र से नही देखती तो फिर खुद किस अधिकार से ये कहती है कि हमें माँ-बहन की नज़र से देखों.

कौन सी माँ बहन अपने भाई बेटे के आगे नंगी होती है. भारत में तो ऐसा कभी नहीं होता था.

सत्य ये है कि अश्लीलता को किसी भी दृष्टिकोण से सही नहीं ठहराया जा सकता. ये कम उम्र के बच्चों को यौन अपराधों की तरफ ले जाने वाली एक नशे की दूकान है. और इसका उत्पादन स्त्री समुदाय करता है.

मष्तिष्क विज्ञान के अनुसार-तरह के नशों में एक नशा अश्लीलता, सेक्स भी है.

चाणक्य ने चाणक्य सूत्र में सेक्स को सबसे बड़ा नशा और बीमारी बताया है. अगर ये नग्नता आधुनिकता का प्रतीक है तो फिर पूरा नग्न होकर स्त्रीया अत्याधुनिकता का परिचय क्यों नहीं देती.

गली गली और हर मोहल्ले में जिस तरह शराब की दुकान खोल देने पर बच्चों पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है उसी तरह अश्लीलता समाज में यौन अपराधों को जन्म देती है.

रिपोर्टर : आपको कब पता चला कि आपका शोषण हुआ है ?

एक्ट्रेस: जब उसने मेरा खर्च उठाना बन्द कर दिया।

Me too😜😜😜😜

महिलाओं के कपड़े 1980 से अब तक

1980 तंक लडकिया कालेज में साड़ी पहनती थी या फिर सलवार सूट. इसके बाद 'साड़ी पूरी तरह गायब हुई' और सलवार सूट के साथ जीन्स आ गया. 2005 के बाद 'सलवार सूट लगभग गायब हो गया' और इसकी जगह स्कीन टाईट काले सफेद स्लैक्स आ गए। फिर 2010 तक लगभग पारदर्शी स्लैक्स आ गए जिसमे आंतरिक वस्त्र पूरी तरह स्प्ष्ट दिखते हैं।

फिर सूट, जोकि पहले घुटने या जांघो के पास से 2 भाग मे कटा होता था, वो 2012 के बाद कमर से 2 भाग में बंट गया और फिर 2015 के बाद ये सूट लगभग ऊपर नाभि के पास से 2 भागो मे बंट गया जिससे कि 'लड़की महिला के नितंब पूरी तरह स्प्ष्ट दिखाई पड़ते है' और 2 पहिया गाड़ी चलाती या पीछे बैठी महिला अत्यंत विचित्र सी दिखाई देती है–मोटी जाँघे, दिखता पेट.

आश्चर्य की बात ये है कि ये पहनावा कालेज से लेकर 40 वर्ष या ऊपर उम्र की महिलाओ में भी अब दिख रहा है. बड़ी उम्र की महिलाए छोटी लड़कियों को अच्छा सिखाने की बजाए उनसे बराबरी की होड़ लगाने लगी है. नकलची महिलाए.

अब कुछ नया हो रहा 2018 मे , स्लैक्स ही कुछ प्रिन्टेड या रंग बिरंगा सा हो गया और सूट अब कमर तक आकर समाप्त हो गया यानी 'उभरे हुए नितंब अब आपके सामने है दर्शन हेतु।' (आज ही एक स्कूल के पीटीएम में आई कुछ 40, 45 वर्षीय महिलाए ऐसे ही दिखीं।) साथ ही, कालेजी लड़कियों या बड़ी महिलाओ मे एक नया ट्रेंड और आ गया, स्लैक्स अब पिंडलियों तंक पहुच गया, कट गया है नीचे से, इस्लाममिक पायजामे की तरह. और सबसे बड़ी बात ये है कि 'ये सब वेशभूषा केवल हिन्दू लड़कियों में ही दिखाई पड़ रही' (हिन्दू पुरुषों की वेशभूषा में पिछले 40 वर्ष मे कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नही हुआ) जबकि इसके उलट मुस्लिम लड़किया तो अब मॉल जाती है, बड़े होटल में सामाजिक पार्टियों में जाती है, तो पूरा ढंका बुर्का या सिर में चारो तरफ लिपटे कपड़े के साथ दिखाई पड़ती है.

हिन्दू लडकिया, महिलाए जितना अधिक शरीर दिखाना चाह रही, मुस्लिम महिलाए उत्तना अधिक ही पहनावे के प्रति कठोर होते जा रही, कपिल के कॉमेडी शो व अन्य टीवी शो में मंच पर आई वीआईपी मेहमानों मे हिन्दू मुस्लिम महिलाओं की वेशभूषा मे यह अंतर स्प्ष्ट देखा जा सकता है.

पहले पुरुष साधारण या कम कपड़े पहनते थे, नारी सौम्यता पूर्वक अधिक कपड़े, अब टीवी सीरियलों, फिल्मों की

चपेट में आकर हिन्दू नारी के आधे कपड़े उतर चुके और स्वयम को माडर्न समझने लगी।

तो 'यूरोप द्वारा प्रचारित नंगेपन के षड्यन्त्र' की सबसे आसान शिकार, भारत्त की मूर्ख तथाकथित हिन्दू लड़किया महिलाए ही है जिनका देश, धर्म, इतिहास के प्रति ज्ञान शून्य ही होता है और कपड़े उतारने को आतुर, उत्सुक ये लडकिया, महिलाए अपने आपको माडर्न सिद्ध करने की कोशिश में स्वयम को अपने आप समाज में प्रतिष्ठित मान लेती है, एक भ्रम, वहम, जिसका कोई लाभ नही एवं नई हिन्दू लड़कियों को उन्मुक्त जीवन, बंधन रहित की तरफ मोड़ने वाली पूरी प्रक्रिया है ये. और पहनावे में यह बदलाव ना पारसी महिलाओं में आया ना मुस्लिम महिलाओं में आया यह बदलाव सिर्फ ईसाई और हिंदू महिलाओं में ही आया.

साभारः फेसबुक वाल से

मानवता विषयक चिन्तन

हिन्दी-साहित्य के क्षेत्र में भारतीय में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के जबरदस्त प्रतिष्ठापक गोस्वामी तुल्सीदास की प्रखर कलम से उद्‌भुत् 'रामचरितमानस' जीवन की समग्रता पर आधारित एक 'कालजयी' रचना है. आलोचकों का बहुलाश ऐसा है जो इसे भारतीय साहित्य में 'अनन्वय' की रचना मानता हैं-इसका आधाभूत कारण हैं- समान-मंगल का सन्देश. मानवतावाद पक्ष हमारे इस यशस्वी महाकवि का सशक्त अवदान है. गोस्वामी जी ने 'मानस' के 'उत्तराखंड़' में नायक 'राम' के द्वारा भरत के प्रति यह कहलवाया हैं कि-

''परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।''

इसका अभिप्राय यह हैं कि जो व्यक्ति दूसरे का 'मंगल-सम्पादन' कर रहा हैं, वह सबसे बड़ा 'धर्म का काम' सम्पादित कर रहा है. वह सबसे बड़ा 'धार्मिक' है. जो व्यक्ति दूसरे को (मनसा, वाचा एवं कर्मणा) पीड़ा पहुँचा रहा हैं, वह सबसे बड़ा 'पाप' का काम कर रहा हैं वह 'दुष्ट' हैं. हमारी यह निश्चित मान्यता हैं कि ऐसे व्यक्ति को मरने के बाद 'मोक्ष' नहीं मिलता. उसे आवगमन के चक्र में (जीवन मरण के चक्र में) फॅसे रहना पड़ेगा. भगवान उसे फिर से 'मानव-जीवन' नहीं देगा. यह वस्तुतः मानसकार का 'शिक्षा-दर्शन' है जो 'मानस' की 'मूल संवेदना' को समझने-समझाने के लिए तथा समाज का मार्ग-दर्शन करने के लिए 'टीका' का काम आज भी कर रहा है. यह हमारे इस कवि की मानवता विषयक अवधारणा है, जिसे हम भारतीय संस्कृति का शाश्वत मूल्य भी मान सकते हैं.

हमारे इस यशस्वी महाकवि ने मानव-जाति को 'जीने की कला' सिखाई है. जीने की कला' जान लेना निश्चय ही सफल जीवन की 'कुंजी' है. हमें गोस्वामी तुलसीदास का आभारी होना चाहिए.

हमारी यह निश्चित मान्यता हैं कि धर्म आचरणकर्त्ता को प्रगतिशील बना देती हैं-संस्कारवान बना देता है तथा अधर्म का अवलम्बन पतनशील (संस्कार विहीन). यशस्वी विचारक, भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के पक्षधर तथा तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा साहब (मंजूषा, पृष्ठ 33) का यह मत अत्यन्ते विचारणीय हैं कि-सन्त तुलसीदास ने राम की कथा के माध्यम से मनुष्य के अन्दर विद्यमान सर्वोत्तम गुणों को संसार के

—डॉ0 महेशचन्द्र शर्मा एवं
डॉ0 हेमवती शर्मा, गाजियाबाद, उ०प्र०

सामने रखा है.

गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में राम और रावण के युद्ध के ब्याज से मानवता और दानवता के युद्ध का ही चित्रण किया है. राम के जीवन से हमें एक सन्देश यह मिलता हैं कि विजय होती हैं. इस दृष्टि से गोस्वामी तुलसीदास के 'राम' युगों-तक सम्पूर्ण मानव-जाति का मार्ग-दर्शन करते रहेंगे।

'राम' के जीवन से सम्पूर्ण मानव-जाति को एक शिक्षा यह भी मिलती हैं कि एक पुरूष के यहॉ एक नारी(धर्मपत्नी) होनी चाहिए. 'मानस' के नायक 'राम व्यक्ति नहीं, वरन् वन्दनीय व्याक्तत्व हैं जिनके आदर्श भारत एवं रचनात्मक कार्यकलापों के आधार पर सम्पूर्ण मानवता को अपने अन्दर 'श्रेष्ठ संस्कार' पैदा कर लेने चाहिए.

हमारे लब्ध प्रतिष्ठ आलोचक डॉ० विजयेन्द्र स्नातक के शब्दों के साथ (हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ 69) यह कहना निरापद हैं कि-

'रामचरितमानस रामकथा के माध्यम से मानव की सफल जीवन यात्रा का सन्देश वाहक काव्य है.

कोशिश ऐसी करो कि हारते हारते कब जीत जाओ पता ही न चले

हिन्दीतर भाषी रचनाकारः

ॐ नमः शिवाय

भाग-9

उन भयंकर काली देवी को देख कर दक्ष सोचने लगा 'यह कैसी अद्भुत बात है पहले तो सती स्वर्ण के वर्ण वाली गौर शरीर, सौम्य तथा सुन्दर थीं, आज वह श्याम वर्ण वाली कैसी हो गई हैं! सती इतनी भयंकर क्यों लग रही हैं? इसके केश क्यों खुले हैं? क्रोध से इसके नेत्र लाल क्यों हैं? इसकी दाड़ें इतनी भयंकर क्यों लग रहीं हैं? इसने अपने शरीर में चीते का चर्म क्यों लपेट रखा हैं? इसकी चार भुजाएँ क्यों हो गई हैं? इस भयानक रूप में वह इस देव सभा में कैसे आ गई? सती ऐसे क्रुद्ध लग रही थीं मानो वह क्षण भर में समस्त जगत का भक्षण कर लेगी. इसका अपमान कर हमने यह यज्ञ आयोजन किया हैं, मानो वह इसी का दंड देने हेतु यहाँ आई हो। प्रलय-काल में जो इन ब्रह्मा जी एवं विष्णु का भी संहार करती हैं, वह इस साधारण यज्ञ का विध्वंस कर दे तो ब्रह्मा जी तथा विष्णु क्या कर पाएंगे?"

सती की इस भयंकर रूप को देख कर सभी यज्ञ-सभा में भय से कांप उठे, उन्हें देख कर सभी अपने कार्यों को छोड़ते हुए स्तब्ध हो गए. वहाँ बैठे अन्य देवता, दक्ष प्रजापति के भय से उन्हें प्रणाम नहीं कर पाये. समस्त देवताओं की ऐसी स्थिति देखकर, क्रोध से जलते नेत्रों वाली काली देवी से दक्ष ने कहा, 'तू कौन है निर्लज्ज? किसकी पुत्री हैं? किसकी पत्नी हैं? यहाँ किस उद्देश्य से आई हैं? तू सती की तरह दिख रही हैं क्या तू वास्तव में शिव के घर आई मेरी कन्या सती हैं?

इस पर सती ने कहा! 'अरे पिताजी, आपको क्या हुआ हैं? आप मुझे क्यों नहीं पहचान पा रहें हैं? आप मेरे पिता हैं और मैं आपकी पुत्री सती हूँ, मैं आपको प्रणाम करती हूँ.'

दक्ष ने सती से कहा! 'पुत्री, तुम्हारी यह क्या अवस्था हो गई हैं? तुम तो गौर वर्ण की थीं, दिव्य वस्त्र धारण करती थीं और आज तुम चीते का चर्म पहने भरी सभा में क्यों आई हो? तुम्हारे केश क्यों खुले हैं? तुम्हारे नेत्र इतने भयंकर क्यों प्रतीत हो रहें हैं?

क्या शिव जैसे अयोग्य पति को पाकर तुम्हारी यह दशा हो गई हैं? या तुम्हें मैंने इस यज्ञ अनुष्ठान में नहीं आमंत्रित किया इसके कारण तुम अप्रसन्न हो? केवल शिव पत्नी होने के कारण मैंने तुम्हें इस यज्ञ में निमंत्रित नहीं किया हैं, ऐसा नहीं हैं की तुमसे मेरा स्नेह

-विजय कुमार सम्पत्ति,
सिकंदराबाद, तेलांगना

नहीं हैं, तुमने अच्छा ही किया जो तुम स्वयं चली आई. तुम्हारे निमित्त नाना अलंकार-वस्त्र इत्यादि रखे हुए हैं, इन्हें तुम स्वीकार करो! तुम तो मुझे अपने प्राणों की तरह प्रिय हो. कही तुम शिव जैसे अयोग्य पति पाकर दुःखी तो नहीं हो?'

इस पर शिव जी के सम्बन्ध में कटुवचन सुनकर सती के सभी अंग प्रज्वलित हो उठे और उन्होंने सोचा; 'सभी देवताओं के साथ अपने पिता को यज्ञ सहित भस्म करने का मुझ में पर्याप्त सामर्थ्य हैं; परन्तु पितृ हत्या के भय से मैं ऐसा नहीं कर पा रहीं हूँ, परन्तु इन्हें सम्मोहित तो कर सकती हूँ.' ऐसा सोचकर सर्वप्रथम उन्होंने अपने समान आकृति वाली छाया-सती का निर्माण किया तथा उनसे कहा 'तू इस यज्ञ का विनाश कर दे. मेरे पिता के मुंह से शिव निंदा की बातें सुनकर, उन्हें नाना प्रकार की बातें कहना तथा अंततः इस प्रज्वलित अग्नि कुंड में अपने शरीर की आहुति दे

देना. तुम पिताजी के अभिमान का इसी क्षण मर्दन कर दो, इसका समाचार जब भगवान शिव को प्राप्त होगा तो वे अवश्य ही यहाँ आकर इस यज्ञ का विध्वंस कर देंगे.' छाया सती से इस प्रकार कहकर, आदि शक्ति देवी स्वयं वहां से अंतर्ध्यान हो आकाश में चली गई.

छाया सती ने दक्ष को चेतावनी दी कि वह देव सभा में बैठ कर शिव निंदा न करें नहीं तो वह उनकी जिह्वा हो काट कर फेंक देंगी.

दक्ष ने अपनी कन्या से कहा, 'मेरे सनमुख कभी उस शिव की प्रशंसा न करना, मैं उस दुराचारी श्मशान में रहने वाली, भूत-पति एवं बुद्धि-विहीन तेरे पति को अच्छी तरह जानता हूँ. तू अगर उसी के पास रहने में अपना सब सुख मानती हैं, तो तू वही रह! तू मेरे सामने उस भूत-पति भिक्षुक की स्तुति क्यों कर रही हैं?'

छाया-सती ने कहा! 'मैं आप को पुनः समझा रहीं हूँ, अगर अपना हित चाहते हो तो यह पाप-बुद्धि का त्याग करें तथा भगवान शिव की सेवा में लग जाए। यदि प्रमाद-वश अभी भी भगवान शंकर की निंदा करते रहें तो वह यहाँ आकर इस यज्ञ सहित आप को विध्वस्त कर देंगे.'

इस पर दक्ष ने कहा, 'कुपुत्री, तू दुष्ट हैं! तू मेरे सामने से दूर हट जा. तेरी मृत्यु तो मेरे लिए उसी दिन हो गई थीं, जिस दिन तूने शिव का वरन किया था, अब बार-बार मुझे अपने पति का स्मरण क्यों करा रही हैं? तेरा दुर्भाग्य हैं की तुझे निकृष्ट पति मिला हैं, तुझे देख कर मेरा शरीर शोकाग्नि से संतप्त हो रहा हैं। हे दुरात्मिके! तू मेरी आंखों के सामने से दूर हो जा और अपने पति का व्यर्थ गुणगान न कर.'

दक्ष के इस प्रकार कहने पर छाया सती क्रुद्ध हो कर भयानक रूप में परिवर्तित हो गई. उनका शरीर प्रलय के मेघों के समान काला पड़ गया था, तीन नेत्र क्रोध के मारे लाल अंगारों के समान लग रहे थे. उन्होंने अपना मुख पूर्णतः खोल दिया था, केश खुले पैरो तक लटक रहें थे. घोर क्रोध युक्त उस प्रदीप्त शरीर वाली सती ने अट्टहास करते हुए दक्ष से गंभीर वाणी में कहा! 'अब मैं आप से दूर नहीं जाऊंगी, अपितु आप से उत्पन्न इस शरीर को शीघ्र ही नष्ट कर दूंगी.' देखते ही देखते वह छाया-सती क्रोध से लाल नेत्र कर, उस प्रज्वलित यज्ञकुंड में कूद गई. उस क्षण पृथ्वी कांपने लगी तथा वायु भयंकर वेग से बहने लगी, पृथ्वी पर उल्का-पात होने लगा. यज्ञ अग्नि की अग्नि बुझ गई, वह उपस्थित ब्राह्मणों ने नाना प्रयास कर पुनः जैसे-तैसे यज्ञ को आरंभ किया.

जैसे ही शिव जी के ६० हजार प्रमथों ने देखा की सती ने यज्ञ कुंड में अपने प्राणों की आहुति दे दी, वे सभी अत्यंत रोष से भर गए. २० हजार प्रमथ गणो ने सती के साथ ही प्राण त्याग दिए, बाकी बचे हुए प्रमथ गणो ने दक्ष को मरने हेतु अपने अस्त्र-शास्त्र उठाये. उन आक्रमणकारी प्रमथों को देख कर भृगु ने यज्ञ में विघ्न उत्पन्न करने वालों के विनाश हेतु यजुर्मंत्र से दक्षिणाग्नि में आहुति दी. जिस से यज्ञ से 'ऋभु नाम' के सहस्रों देवता प्रकट हुए, उन सब के हाथों में जलती हुई लकड़ियाँ थीं. उन ऋभुयों के संग प्रमथ गणो का भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें उन प्रमथ गणो की हार हुई.

यह सब देख वहां पर उपस्थित सभी देवता, ऋषि, मरुद्गणा, विश्वेदेव, लोकपाल इत्यादि सभी चुप रहे. वहां उपस्थित सभी को यह आभास हो गया था की, वहां कोई विकट विघ्न उत्पन्न होने वाला हैं, उनमें से कुछ एक ने भगवान विष्णु से विघ्न के समाधान करने हेतु कोई उपाय करने हेतु कहा. इस पर वहाँ उपस्थित सभी अत्यधिक भयभीत हो गए और शिव द्वारा उत्पन्न होने वाले विध्वंसात्मक प्रलय स्थित की कल्पना करने लगे.

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं
गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम्
जटाजूटमध्ये स्फुरद्गाङ्गवारिं
महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम्

(हे शिव आप) जो प्राणिमात्र के स्वामी एवं रक्षक हैं, पाप का नाश करने वाले परमेश्वर हैं, गजराज का चर्म धारण करने वाले हैं, श्रेष्ठ एवं वरण करने योग्य हैं, जिनकी जटाजूट में गंगा जी खेलती हैं, उन एक मात्र महादेव को बारम्बार स्मरण करता हूँ.

क्रमशः.....

मी टू की तरह,
रिश्वतखोरी के खिलाफ भी ऐसी ही मुहिम की शुरूआत की जानी चाहिये. जिससे लोग खुलकर बताएं कि उन्हें कब, कहाँ और किस अधिकारी/कर्मचारी/नेता को किस काम के लिए, रिश्वत देने के के लिए मजबूर होना पड़ा. आज देश में भ्रष्टाचार को उजागर करने की भी जरूरत है.

हिन्दी

है इतनी मीठी
कहते अमीर खुसरू
इसे शकर, मिसरी
'गुफ़्त हिन्द' में
हैं 'अलफ़ाज खुशगवार'
तभी तो है 'श्रेष्ठ
तुर्की और फ़ारसी से'
उत्तर से दक्खिन
पूरब से पच्छिम
गुजर, माबरी, गौरी
सिंधी, लाहौरी, कश्मीरी,
तिलगंगी, बंगाली और अवधी
ब्रज बोली- सब है हिंदवी
अनेकता में एकता समेटे
महकता हिन्द राष्ट्र।
हर कोने की अपनी बोली
है उसकी सांस्कृतिक पहचान
जड़े इतनी गहरी समायी
सोंधी मिट्टी में।
खुशबू ऐसी बांध ले
जो दिलों को।
विद्यापति की पलक
इसी में, अछहमाण की
मार्तण्ड मंजूषा।
जायसी का अमर हस्ताक्षर
रच 'पद्मावत'
हो गये प्रिय
छंद दोहा चौपाई।
'रामायण' आई-
लेक-मन
गुंजरित चहुं और 'मानस-गान'
झंकृत हृत्तंत्री
मन भाव विभोर
रहीम, रसखान, सूर
पद मन-भावन कृष्ण लीला
हो गयी धन्य ब्रजभूमि।
मुकुन्द, माधव, गोविन्द बोल
केशव माधव हरि-हरि बोल।
कवि जान कहते
कहूंगा कलाम 'रियाज़े जान'
इसी 'मीठी बोली' में।
भाल हिमालय की हिन्दी
है भाषा कहें जिसे हिन्दी।

-डॉ० किश्वर सुल्ताना
द्वारा डॉ० जेड. ए. सिद्दीकी, चौक मोहम्मद सईद खाँ, लंगरखाना, रामपुर-२४४६०१, उ.प्र.

ग़ज़ल

सूनी आँखों से पिता को ताकती है बेटियाँ।
मौन रहकर भी बहुत कुछ बोलती है बेटियाँ।
बेरहम माता-पिता जब गर्भ में ही मारते,
है हमारा जुर्म क्या, यह पूछती हैं बेटियाँ।
आँख का काजल कभी तो आँख का काँटा हुई,
दिल के भावों को सदा पहचानती हैं बेटियाँ।
ब्याह जिससे कर दिया उसकी ही होकर रह गई,
आपके आदेश को स्वीकारती है बेटियाँ।
ऐड़ियाँ रगड़ी है तुमने एक बेटे के लिए,
जन्म से वो हैं पराई, जानती है बेटियाँ।
धन तुम्हारा बाँटने को पुत्र सारे है खड़े,
प्यार ही बस प्यार देखो, बाँटती है बेटियाँ।
उनके सपने सच करे आओ सभी मिलकर 'अखिल'
प्यार के दो बोल ही तो चाहती हैं बेटियाँ

-अखिलेश निगम 'अखिल',
ओम निवास, 51, क्ले स्क्वायर,
कबीर मार्ग, लखनऊ-226001

शिकवे गिले बढ़ने लगे

बदनियत, स्वच्छंता के सिलसिले बढ़ने लगे
यूँ हुए आजाद हम, शिकवे गिले बढ़ने लगे
राजनैतिक खेल सत्ता के लिए खेले गये
देश में अपराधियों के दृढ़ किले बढ़ने लगे
बस्तियां गंदी, गरीबी यूँ हटायी देश से
हर तरफ विस्थापितो के काफिले बढ़ने लगे
खान गहरी, बाँध ऊँचे और वन बौने किये
पाँव पर भारी कुल्हाड़ी, जलजले बढ़ने लगे
हो रही हिन्दी उपेक्षित, रौब इंग्लिश का जमा
दिन ब दिन कान्वेन्टों में, दाखिले बढ़ने लगे
सूत्र बिखरे एकता के, देश टुकड़ों में बँटा
मानसिक संकीर्णताओं के जिले बढ़ने लगे
यूँ तो मंगल, चाँद, सूरज से बढ़ी नज़दीकियां
आदमी से आदमी के फासले बढ़ने लगे।

-आचार्य भगवत दुबे,
जबलपुर, म.प्र.

गुरुवर की अदा

हर घंटा कटिंग पियत बाटे,
औ मुँह मा पान दबावत हैं
बैठि दुकानिप आधा घंटा
कुछ गंवई बतियावत हैं
उ हमका कहाँ पढ़ावत हैं।
नकल लिखौ दुइ चार पेज कुछ
तौ हिन्दी कबहुँ पढ़ावत हैं
पर मतलब होवै कविता का
इ नाहीं कबहुँ बतावत हैं
उ अइसै हमै पढ़ावत हैं।
अंग्रेजी, विज्ञान होत का
न कबहूँ हमैं बतावत हैं
किस्सागोई तौ बहुत भइल
पर कुछ औरौं नाहीं सिखावत हैं
उ हमका कहाँ पढ़ावत हैं।
आठ बजे स्कूल खुली
ग्यारह बजतै कुछ काम पड़ी
नित बात इहै दोहरावत हैं
उ अइसै स्कूल चलावत हैं
उ हमका कहाँ पढ़ावत हैं।
नौकरी कै मतलब है कागज
उ कगजै सदा बनावत हैं
इ कागज बड़ा जरूरी है
कगजै नौकरी बतावत हैं
उ अइसै पाठ पढ़ावत हैं।
न डस्टर चाक छुइन कबहूँ
न श्यामपट्ट पर लिखिन कुछू
दिखा के बस अंगुरी आपन
उ गिनती, गणित पढ़ावत हैं
उ अइसै सदा पढ़ावत हैं।
ढोल मजीरा सब बाटै
पर हमका नाहिं दिखावत है
बात बोलि मीठी-मीठी
संगीत इहै समुझावत हैं
उ अइसै हमें पढ़ावत हैं
उ कुछ न कबहुँ पढ़ावत हैं।।

-डा. पार्वती यादव, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

तेवरी छंद

01

पूँजीवादी चौंटे, कुछ दिन खुश हो लें करकैंटे
जनवादी चिन्तन की खिल्ली चार दिनों की है।
राजनीति के हउआ, कुछ दिन मौज उड़ालें कउआ
सत्ता-मद में डूबी दिल्ली चार दिनों की है।
ओढ़े टाट-बुरादा, फिर भी ऐसे जिये न ज्यादा
गलती हुई बरफ की सिल्ली चार दिनों की है।
अब घूमेगा डंडा, इसकी पड़े पीठ पर कंडा
दूध-मलाई चरती बिल्ली चार दिनों की है।
कांपेंगे मुस्तंडे, अब अपने हाथों में डंडे
जन की चाँद नापती गिल्ली चार दिनों की है।
शोषण करती तोंदें, कल संभव है शोषित रौंदें
फूलते गुब्बारे की झिल्ली चार दिनों की है।

02

त्यागी वे चौपालें, मन की व्यथा जहाँ बतिया लें
अब तो चिलम-'बार के हुक्का' हमको प्यारे हैं।
नूर टपकता हरदम, उन बातों से दूर हुए हम
लुच्चे लपका लम्पट फुक्का हमको प्यारे हैं।
हर विनम्रता तोड़ी, हमने रीति अहिंसक छोड़ी
गोली चाकू घूँसा मुक्का हमको प्यारे हैं।
कोकक्रिया के अंधे, हमने काम किये अति गन्दे
गली-गली के छिनरे-लुक्का हमको प्यारे हैं।
धर्म-जाति के नारे, यारो अब आदर्श हमारे
सियासी धन-दौलत के भुक्का हमको प्यारे हैं।

03

बदले सोच हमारे, हम हैं कामक्रिया के मारे
अबला जिधर चले इक छिनरा पीछे-पीछे है।
दालें भरें उछालें, कैसे घर का बजट सम्हालें
मूँग-मसूड़-उड़द के मटरा पीछे-पीछे है।
देखा दाना बिखरा, चुगने बैठ गयी मन हरशा
चिडिढ या जान न पायी पिंजरा पीछे-पीछे है।
मननी ईद किसी की, कल चमकेगी धार छुरी की
कसाई आगे-आगे बकरा पीछे-पीछे है।
साधु नोचता तन को, कलंकित करे नारि-जीवन को
अंकित करता 'रेप' कैमरा पीछे-पीछे है।
आज जागते-सोते, हम अन्जाने डर में होते
लगता जैसे कोई खतरा पीछे-पीछे है।

-रमेशराज, अलीगढ़, उ०प्र०

यह कौम अपनी
कमजोरियों से
निजात नहीं पायेगी
तो कैसे आगे बढ़ पाएगी!
सौंदर्य और प्रेम, लिखेगी
सौंदर्य और प्रेम में, दिखेगी
तो बुद्धिमत्ता का परिचय
कब और कैसे देगी
किसी और के चालाक
दिमाग़ की शिकार बनेगी!
स्वं से जुड़ी बातों
अधिकारों, विषयों पर
यूं चुप्पी साधती रहेगी
तो शोषण के विरुद्ध
कैसे लड़ेंगी!

निजात

गहराई से बनी
सृजन की धुरी
अद्भुत तत्वों में ढ़ली
प्रेम, वात्सल्य ही नहीं
शक्ति से सशक्त भी
खुद को ही नहीं
पहचानेगी तो
किसी को क्या
समझाएगी!
विवेक की साधना
नहीं करेगी
संतुलन को नहीं
अपनायेगी
ईर्ष्या, द्वेष से
परे नहीं जाएगी
प्रपंच में खुद को
यूं ही उलझायेगी
तो' शूद्र, पशु,नारी
ये सब ताड़न के
अधिकारी' को
कैसे झुठलायेगी!
जानती भी है सब
ज्ञान है, साथ विज्ञान है
फिर भी अंजान रही तो
उचित-अनुचित कैसे
समझ पायेंगी!

-अनुपमा श्रीवास्तव 'अनुश्री'
भोपाल, म.प्र.

नीलिमा शर्मा, नई दिल्ली की कविताएं

यूँ ही

मुख्य दरवाज़ा
खुलता नहीं अब हरेक के लिये
कैमरे की आँख से झाँका जाता है
और फिर अनुमति मिलती है
आगुन्तक को
भीतर प्रवेश की
लेकिन यह मन मोया मरजाना
नहीं झाँकता
किसी मैजिक आँख से
ओर गाहे बगाहे
प्रवेश कर जाते
अनचाहे लोग
अवचेतन में
ओर फिर
शुरू हो जाती है
एक लड़ाई
इसकी/उसकी
मेरी/तेरी
कितना भी समझाओ
ऊँच नीच बताओ
आँसूं बहाओ
खुशियाँ मनाओ
मरजाना
मुड़ मुड़ उसने वही है जाना
जो निषेधात्मक होता है
एक आम सी जिंदगी में

अकेली

तेरी मधुर यादें
खामोशी की शाख पर
समन्दर की लहरो सी
उफनती है जब तब

मेरी मोहब्बत के उन
कोसे कोसे लफ़्ज़ों वाले
मीठे खतो को बोसा करती
सिहरती है जब तब

और फिर
गुलाबी रातो को
मुझसे गुफ्तगू करती हैं
और मैं तुम हो जाती हूं
अक्टूबर की अकेली रातो में
और सिसकती हूं जब तब

अवसाद

कुछ खत
जो बिना भेजे तुझे
पड़े है
मेरी अलमारी की अखबार के नीचे
बाट जोहते
अपनी मंज़िल की
आज फेंक रही हूँ
गंगा में
तेरे पाप पुण्य का हिसाब
अब तू ही समझ
मैंने क़र्ज़ उतार दिया
इस बरस
राखी वाले
पिछले कई बरसो का
तूने पढ़ना जो
छोड़ दिया न
मेरे बहते आंसुओ को
मेरी खामोश सिसकियों को
और अपनी सूनी कलाई को

बुआ जी

-डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी

सुकेश के विवाह की तैयारियाँ चल रही हैं. दिसम्बर के पहिले वीक में वो न्यूयार्क से आने वाला है. शिप्रा हमारे घर की पहली शादी में सिर्फ़ इसलिए नहीं आई क्योंकि उसके पास सुधेश की शादी का आमंत्रण नहीं पहुँचा था. रागिनी आमंत्रण पत्रों पर पते लिख रही थी. पति रामानन्द ने रागिनी की ओर देखते हुए कहा ''पहले भी यह भूल नहीं होती. अम्मा जी के कारण यह सब हुआ, मैंने जब शिप्रा का पता पूँछना चाहा तो उन्होंने कहा कि वो तो छोटी बच्ची है, कारड नहीं भी पहुँचा तो कोई बात न ही मैंने भी ध्यान नहीं दिया जिससे आपसी गलत फहमियाँ बढ़ती चली गईं' मुझे जब ज्ञात हुआ कि छोटी-छोटी बातों पर सम्बन्ध खराब हो जाते हैं, सोचा कि सम्बन्धों को खराब नहीं करना चाहिये. अम्मा जी को बहुत समझाया कि बड़ा होने के नाते आपको टूटते सम्बन्धों को जोड़ना चाहिये. समझाना आपका फर्ज़ है, आगे वो जाने उनका काम, किन्तु अम्मा जी की सोच जंगिल हो गई है, खुद चाहेंगी तो ये जंग सोच के चाकू से साफ कर सकती है. अम्मा जी के सम्बन्ध अपनी सगी छोटी बहिन से भी नही के बराबर है. उनका स्वभाव भी कुछ ऐसा है कि वो अपनो की भी बुराइयाँ अपनो से करने में नहीं हिचकती, संभव है उनका स्वभाव संघर्षों को झेलते-झेलते कठोर हो गया है. उनके घर बार में केवल वो और उनकी दो बेटियाँ हैं. जब से बेटियों का परिवार बना और उनके सन्तान हुई तभी से उन्होंने अपने परिवार को अपनी बेटियों तक सीमित कर लिया है.

दोनों बेटियों के भी दो-दो बेटियाँ तथा दो-दो बेटे हैं, अब बेटी के दूसरे बेटे की शादी है जिसमें बेटी की ससुराल वाले आ रहे है. निमंत्रण पत्र में ऐसे ऐसे नाम हैं जिन्होंने परिवार को भी प्रदूषित करने से न छोड़ा. उस आमंत्रण पत्र में एक ऐसा नाम है जिसने पैसे के चक्कर में अपने बाप को कमरे में बन्द कर इतना पीटा कि वो मरणासन्न अन्तिम श्वासें गिन रहा है.

शिप्रा विख्यात लेखिका है, यदि उस तक आमंत्रण पत्र नहीं पहुंचाया तो ये इनकी संकीर्ण मानसिकता है. सच को क्यों छिपाऊँ, मैं मांजी को समझाने का प्रयास करूँगा और मैं माँजी के समीप पहुँच गया। माँजी के घर का द्वार खटखटाया तो माँजी ने दरबाजा खोलते ही कहा ''बैठो-बैठो, कैसे आना हुआ?'' मैंने वेहिचक कहा ''माँजी क्या निमंत्रण पत्र आपने अपने सम्बन्धियों तक पहुँचवा दिये?'' माँ जी ने मुझे घूरते हुए रुखेपन के साथ कहा ''कौन से सम्बन्धी?'' मैंने जोर देकर कहा ''वही आपकी भतीजी और भतीज दामाद जिन्हें आपने पिछली षादी में आमंत्रण पत्र तक नहीं भेजा?'' माँ जी ने आक्रोष भरे स्वर में कहा ''अजी वो कैसी भतीजी है जिसने कार्ड न पहुँचने पर अपनी बुआ की खूब निन्दा की, भगवान बचाये ऐसे रिष्तों सेकृ'' मैंने कहा ''सो तो ठीक है, किन्तु भूल किसकी थी? आपकी या आपकी भतीजी की?'' ''बेषक भूल मेरी थी, मुझे उसका अता पता नहीं मालूम था, कैसे मेरी बेटी उसे आमंत्रण भेजतीकृ'' मैं निरन्तर सोच रहा था कि इस उम्र को पाकर भी माजी बच्चों जैसी नासमझ हैं, अगर सब इन्हीं की तरह सोचें विवचारें तो सारे रिष्ते टूट जायें और मरते दम कोई चार कन्धे भी लगाने नहीं आयेगा।

निमंत्रण पत्र में ऐसे ऐसे नाम हैं जिन्होंने परिवार को भी प्रदूषित करने से न छोड़ा। उस आमंत्रण पत्र में एक ऐसा नाम हैं जिसने पैसे के चक्कर में अपने बाप को कमरे में बन्द कर इतना पीटा कि वो मरणासन्न अन्तिम श्वासें गिन रहा है।

मॉजी ने अपने इसी दुःस्वभाव के कारण अपनी समधिनों से भी रिष्ते तोड़ लिये, जिसका परिणाम इनकी बेटी भोग रही है क्योंकि वेटी की सास ने अपनी वहू व बेटों से रिष्ता तोड़ लिया, खूब सुनती है माँजी की बेटी किन्तु ये हैं कि आदत से मजबूर , मैंने जब-जब इन्हें कुछ समझाने का प्रयास किया तो

मुझसे भी लड़ पड़ी। इनकी भतीजी इसी नगर में रहती हैं, जब कभी इनके पास पहुंची तो वेरुखी से हिदायत करते हुए कहा ''षिप्रा यहां हमेषा अकेले आना, न बच्चे न दामाद साथ आयें, उनके आने का मतलब हुआ उनका टीकापटा करना, खिलाना पिलाना सो मेरे जिस्म ने जवाब दे दिया, यह सब मेरे बस का नहीं है'' बेटी का घर और इनका घर मिला हुआ है, उसी पर फूली रहती हैं। दामाद की निगाह इनके मकान पर हैं, जब इनसे कभी दामाद ने इस विशय में बात की, तो उन्हें भी धता बताई।

विधवा माजी, दोनों वख्त दलिया और दूध का सेवन करती है। फलों में सन्तरे का जूस हर दिन पीना इनकी आदत है। लम्बी कद काठी की तन्दुरुस्त वष्द्धा जिनकी आँखों पर चष्मा तथा गले में काले मोती की माला, कानों में डायमन्ड के टाप्स, हाथों में एक-एक सोने का कंगन पहिने रहती हैं। आयु करीब ७० वर्श गेहुँआ रंग, बड़ी- बड़ी आँखें और फैली हुई नाक, तथा सिंथेटिक्स की प्रिन्टिड साड़ी पहिने, अब तक रौब दाब से बातें करती हैं। जब से विधवा हुई हैं, रिष्तों नातों की अहमियत भूलती जा रही हैं। इनसे जब मिलोतब उनका रोना लेकर बैठ जाती हैं कि रिष्तेदार किसीकाम के नहीं और मैं किसी का आतिथ्य नहीं कर सकती। षिप्रा से मेरी बात हुई कि वो इनकी बेटी के बेटे की षादी में क्यों नहीं आई, तो उत्तर मिला बुआ जी ने कार्ड नहीं दिया, चलो कार्ड नहीं दिया, कोई बात नहीं मगर दामाद को फोन सेतो सूचित करतीं, वो भी नहीं और जब अपनत्व मेंबुआ जी से इस उपेक्षा का कारण पूँछा गया तो उत्तर मिला कि उनकी बेटी ने आमंत्रण भेजा था, पता नहीं क्यों नहीं मिला। उल्टा षिप्रा को ही बुरा भला माँ बेटी ने कह डाला। षिप्रा मौन रहने लगी। दूसरे बेटे की षादी में भी बेटी ने आमंत्रण नहीं दिया तो षिप्रा ने कहा ''पता नहीं क्यों दीदी ने मुझसे षत्रुता कर ली'' जिस पर मैंने समझाया ''उन्होंने तुमसे नहीं स्वयं से षत्रुता की है, अकारण वैर भाव रखना स्वयं के लिए घातक होता है।'' षिप्रा विवेकषील है। उसने प्रत्युत्तर दिया- ''वुआ जी के विशय में क्या कहूँ सभी के साथ उनका यही हाल है, चाहे उनके दामाद हों या समधी- समधिन, बहनें हों या भाई भावज, पड़ोसी हों या पड़ोसन किसी से न उनकी पटती न उनकी बेटियों की, सब अलग थलग रह रही हैं।

बुआजी के पति शादी के चार वर्ष बाद ही अपाहिज हो गए थे, उस समय से ही बुआ जी के जीवन की संघर्ष गाथा आरम्भ हुई. उनका सारा जीवन अपने पति की सेवा और घर ग्रहस्थी में बीता है।

षिप्रा की आँखें उदासी से भर जाती हैं और बुआ जी का प्रसंग आते ही वो कहती है- ''रिकार्ड है कि बुआ जी ने और उनकी बेटियों ने कभी हम लोगों से फोन तक किया हो। मुझे जब- जब बुआजी और उन की बेटियों या दीदियों की याद आई, मैंने ही उन्हें बराबर फोन किये जिसका अर्थ उन्होंने लगाया कि संभव है मेरा कोई स्वार्थ हो किन्तु मैंने फिर भी फोन करना बन्द न किये। दषा यह है कि व्याह- षादियों में सिर्फ आमंत्रण भेजकर ये लोग कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं किन्तु भूल रही हैं कि इनके स्नेहिल सम्बन्ध व्यर्थ के अहं से षिथिल होते जा रहे हैं''। एकदूसरे की सुधवुध लेने को, दो चार महीनें में तो फोन करना ही चाहिये, इसमें भी कैसा ईगो जो सम्बन तुड़वा दे।

मैं षिप्रा को बराबर समझाता हूँ कि इन बुरे प्रसंगों को न सोचों न इनकी चिन्ता करो। ऐसे लोगों से बचने का उपाय है उपेक्षाभाव! समय ऐसों को सबक अवष्य सिखाता है तब आती है समझ में। अन्त में पछतावे के अतिरिक्त कुछ नहीं बचता ऐसों के पास। कई लोगों को स्वयं मैंने आँखों से देखा है कि जब जीवन की रेल छूटने को तैयार होती है उस समय अपनी भूलों पर पछताते दुनिया से कूच कर जाते हैं। क्योंकि आरम्भ से ही सोच समझ कर कदम बढ़ाते हैं।

बुआ जी के पति षादी के चार वर्श बाद ही अपाहिज हो गए थे, उस समय से ही बुआ जी के जीवन की संघर्श गाथा आरम्भ हुई। जब विधवा हुई उस समय भी इन्होंने किसी को मौते मेंभी नहीं बुलाया। आसपास रहने वाले सम्बन्धी और पड़ोसी स्वयंही बुआ जी के घर अन्तिम यात्रा हेतु आ गये थे। इनका स्वभाव परिस्थितियों ने ऐसा बना दिया कि बुआ जी सबसे अलग थलग रहना चाहती हैं। इनका सारा जीवन अपने पति की सेवा और घर ग्रहस्थी में बीता है। षिप्रा इसीलिए बुआ जी को बारम्बार फोन कर उनके हालचाल पूँछती है। वो मुझसे कहती है-''बुआ जी की किसी बात का मैं बुरा नहीं मानती विवषतायें और विशम परिस्थितियाँ ऐसे साँचे में ढालती हैं कि इनमें ढला व्यक्ति सबसे अलग थलग दीखता है।''

किन्तु बुआ जी अपनी बेटी पर फूली

हैं। दूसरे बेटे की षादी में भी षिप्रा को जानबूझकर नहीं बुलाया गया जिसमें बुआ जी और उनकी बेटी का दुःस्वभाव ही कारण है क्योंकि किसी भी स्तर पर इनकी बेटी गुमानी से षिप्रा की तुलना नहीं हो सकती चाहे पैसा हो या षिक्षा दीक्षा हर स्तर पर गुमानी क्या है षिप्रा के सामने। दिसम्बर के आरम्भ में दूसरे बेटे की षादी जयपुर की युवती कनु से सम्पन्न हुई जो उसकी सहपाठिनी होने के साथ- साथ सहकर्मी भी थी। विवाह के बाद मुकेष और रागिनी नैनीताल स्नोफाल देखने पहुँचे। कुछ समय बिताकर वापस दिल्ली आये और जीवन की रेल सामान्य पटरी पर चलने लगी। जब मुकेष की पदोन्नति हुई दोनों को हैदराबाद जाना पड़ा। वर्शों ऐसे ही निकल गये। षादी के कुछ वर्श ही बीते थे कि रागिनी का स्वास्थ्य खराब होने लगा। हैदराबाद में दूर दूर तक अपना कोई न पाकर मुकेषने माँ एवं पिता को हैदराबाद पहुँचने को विवष किया। मुकेष की नौकरी और व्यवसाय दोनों में सहयोग के लिए माँ और पिता का हैदराबाद आना आवष्यक हो गया। एक माह के अन्दर मुकेष के माता पिता हैदराबाद वर्शों के लिए आ गये। माँजी अब अकेली हैं, दोनों बेटियाँ दूर दूर हो गई हैं। उनके हाल चाल कौन पूँछता होगा वही जाने। अचानक षिप्रा का फोन घनघनाया- षिप्रा व्यस्ततावष फोन नहीं उठा पाई। अगले दिन घण्टी की घनघनाहट हुई और षिप्रा ने फोन उठाकर पूँछा ''कौन''? उत्तर मिला ''मैं हूँ बुआ, बीमार चल रही हूँ'' ''अरे बुआ जी, आज कैसे याद आ गई? बुआ की आँखे सजल हो गई। हृदय में दबे उद्‌गार मार्ग मिलते ही अविराम धारा जैसे प्रवाहित होने लगे और अस्फुट षब्दों में कहने लगी-''मैंने तुम्हारे साथ जो किया उसका मुझे कश्ट है''। षिप्रा भावुक हो गईकृ ''बुआ जी, पष्चाताप, ही पर्याप्त है। मैं आपके पास अनिमंत्रित ही आऊँगी'' और रिसीवर रख दिया।

दो दिन बाद षिप्रा जब बुआ जी के घर पहुँची तो उनकी रुग्णावस्था देखकर व्याकुल हो गई। ज्वर की तीव्रता में पड़ी बुआजी को अदरक बाली चाय पिलाकर उनके पास कुछ देर बैठी और कहा- ''बुआ जी आज ही आप मेरे साथ चलिये, जहां मैं आपकी तीमारदारी कर आपको पुनः स्वस्थ कर दूँगी''' बुआ जी अन्दर ही अन्दर लज्जित हो रही थीं क्योंकि व े अब तक अपनी दोनों बेटियों तक सीमित थीं। मैंने बुआ जी से कहा ''अब आपको समझ में आ रहा है कि सम्बन्ध मुक्तामाला है अगर मोती विखरे तो उन्हें पुनः माला में पोकर माला ठीक कर लें'' बुआ जी निरुत्तर बन देखे जा रही थीं। इस एकाकीपन में षिप्रा ही उनका एकमात्र सहारा थी।

षिप्रा बुआ जी को साथ लेकर अपने घर चलने वाली थी। बुआ जी ने अटैजी तैयार कर लीं और एक चेन षिप्रा को सौंपते हुए कहा ''यह तुम्हारे लिए हैं! ''मैं कहां पहनूँगी इसे।'' बुआ जी पष्चाताप की ज्वाला में जलकर स्मषतियों की वीथी में पहुँच गईं जब उन्होंने अपने स्वजनों के साथ विशम व्यवहार कर सबको अपने से अलग कर लिया था। षिप्रा ने चैन लौटाते हुए कहा ''यह सब दीदी को दीजिएगा'' ''नहीं- नहीं तुझे मेरी सौंगन्ध हैं, कहते हुए बुआ ने षिप्रा को सोने की चैन पहना दी। षिप्रा यह सब निर्निमेष नयनों से देख रही थी। किन्तु बुआ जी अपनी भूलों कास्मरण कर कर रही थी ''मुक्तामाला को तोड़ना अच्छा नहीं। षिप्रा तुम्हारे स्नेह और समादर का सच्चा मोती मेरी सम्बन्धों की माला का पैंडिल है जिसके बिना क्या है इस माला में। तीव्रात से घर की ओर चल पड़ी। घर पहुँचकर बुआ जी को वह सब प्राप्त हुआ जिसके अभाव में उनके

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

1.प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर 2. बिक्री की व्यवस्था
3.प्रचार-प्रसार की व्यवस्था 4.विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011

ई–मेलः sahityaseva@rediffmail.com

पहला कदम

✍पवित्रा अग्रवाल,

आज बुआ फिर आई थीं. बुझा बुझा सा मन, शिथिल सा तन, भावहीन चेहरा देख कर मैं दुखी हो जाती हूँ. जब फूफाजी जीवित थे, एक स्निग्ध सी मुस्कराहट बुआ के व्यक्तित्व का हिस्सा थी. हर समय मैंने उन्हें खुश देखा था. बीमारी में भी उन्हें कभी मुह लटकाये या हाय हाय करते नहीं देखा था. एक मेरी माँ हैं हर समय खीजती, झुंझलाती रहती हैं जैसे उनसा दुखी इन्सान कोई दूसरा नहीं. ज़माने भर के सारे गम भगवान ने जैसे उनकी झोली में ही डाल दिए हों पर बुआ अपने जीवन में बड़ी संतुष्ट थीं. कम से कम देखने वाले को तो ऐसा ही महसूस होता था. ऐसा भी नहीं कि उनके जीवन में उलझनें नहीं थीं. बच्चों की पढ़ाई की वजह से उन्हें फूफा जी से अलग रहना पड़ता था क्यों की फूफा जी की तबादले वाली नौकरी थी. कहीं छह महीने, कही साल तो कहीं दो तीन साल भी उन्हें रहना पड़ जाता था. इस अनिश्चितता की वजह से बच्चों की पढाई में बाधा पड़ती थी, इसलिए बुआ इस कसबे में बच्चों के साथ रहती थीं. फूफाजी जब-तब आते रहते थे. छुट्टियों में बुआ बच्चों के साथ उनके पास चली जाती थीं.

मुझे याद है आसपास की महिलाएं अक्सर बुआ से मजाक करतीं व उन्हें छेड़ती रहती थीं-'अरे रेड्डी गारु पर नजर रखना. तुम यहाँ रहती हो वह बाहर अकेले रहते हैं...आंध्रा में तो दो बीबी रखने का रिवाज सा रहा है. किसी दूसरी के जाल में फंस गए तो सारी उम्र पछताओगी.'

कभी बुआ हँस कर टाल देती थीं तो कभी कह भी देती थीं-'इस तरह की बातें मैं नहीं सोचती, यह रिश्ता विश्वास का है और विश्वास पर दुनियां कायम है. बिना किसी आधार के मैं शक करूँ या भविष्य की कल्पना करके अपने सुखी वर्तमान को दुखी बनाऊं, यह मुझे पसंद नहीं. फिर भी यदि किस्मत में वैसा लिखा है तो जब होगा तब सोचेंगे की क्या करना है.

बुआ का घर हमारे घर से बहुत दूर नहीं था. एक दिन अचानक हैदराबाद से फूफाजी के एक्सीडेंट का समाचार आया था कि 'हालत गंभीर है, सर में बहुत चोट आई है', सुन कर माँ ,पापा बुआ तभी चले गए थे किन्तु मौत किसी छलिया सौत सी फूफा जी को बुआ से छीन कर लेजा चुकी थी . बुआ की जिंदगी रेगिस्तान बन गई थी और छोटे बड़े झंझावतों से निरंतर जूझते रहना उनकी नियति थी. फूफाजी पांच बच्चे छोड़ गए थे, तीन बेटियां, दो बेटे. सबसे बड़ी कात्यायनी सोलह साल की रही होगी. तब वह इंटर प्रथम वर्ष में पढ़ रही थी. उससे छोटा राघव हाई स्कूल में था. मुझे याद है सब रिश्तेदारों का सुझाव था की जल्दी से जल्दी कात्यायनी की शादी कर दी जाये तो एक जिम्मेदारी ख़तम हो जायेगी. बाकी की दोनों तो अभी बहुत छोटी हैं. शादी के कई रिश्ते भी आये थे लेकिन बुआ ने मना कर दिया. उनका कहना था कि बिना बाप की बच्ची है पर माँ तो अभी जिन्दा है न. उसे मैं खूब पढाऊँगी ताकि भविष्य में जरुरत पड़ने पर वह आत्मनिर्भर बन सके. उसके पिता की इच्छा अपने बच्चों को खूब पढ़ाने की थी, रिश्तेदारों को बुरा भी लगा पर बुआ अपने फैसले पर अडिग थीं.

वह ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं थीं, हाई स्कूल पास थीं. उनकी योग्यता के हिसाब से उन्हें फूफाजी के दफ्तर में ही नौकरी मिल गई थी. छोटे बच्चों को घर में छोड़ कर कैसे ऑफिस जाऊँगी यह सोच कर वह परेशान थीं.हमारी दादी हमारी मम्मी से परेशान थीं और हमारी मम्मी को भी अपनी सास यानि हमारी दादी का साथ रहना अच्छा नहीं लगता था. दादी को राह मिल गई थी और वह बुआ के साथ रहने चली गई थीं. अपनी माँ का साथ पाकर बुआ की परेशानियाँ कम हो गई थीं.

हैदराबाद में मकान बनाने के लिए फूफा जी ने प्रोविडेंट फंड से लोन लिया हुआ था, अतः आफिस से तो ज्यादा पैसा नहीं मिला था. हाँ बीमा कंपनी से बुआ को करीब अस्सी

कभी बुआ हँस कर टाल देती थीं तो कभी कह भी देती थीं-'इस तरह की बातें मैं नहीं सोचती, यह रिश्ता विश्वास का है और विश्वास पर दुनियां कायम है. बिना किसी आधार के मैं शक करूँ या भविष्य की कल्पना करके अपने सुखी वर्तमान को दुखी बनाऊं, यह मुझे पसंद नहीं.

हजार रुपये मिले थे जिन्हें वह बैंक में फिक्स करना चाह रही थीं पर हमारे पिता का कहना था कि बैंक में पैसा रखने से अच्छा है तुम वह रुपये मुझे दे दो. मैं तुम्हारे नाम से कोई जमीन खरीद देता हूँ ...प्रापर्टी पर बहुत तेजी से दाम बढ़ते हैं, कुछ वर्षों में ही तीन चार गुने हो जायेंगे, जब जरुरत हो बेच लेना.'

बुआ ने बीस हजार अपने पास रख कर साठ हजार अपने भाई यानि हमारे पिता को दे दिए थे. फूफा जी की मृत्यु हुए करीब सात आठ वर्ष हो चुके हैं. बुआ उनकी मौत के दो वर्ष बाद ही हैदराबाद चली गई थीं क्योंकि बच्चो की पढाई की सुविधाएँ वहां अधिक थीं.

वही बुआ रात भर का सफ़र करके हैदराबाद से आई हैं. करीब करीब हर महीने आती हैं, पापा से अपने पैसे वापस मांगने और यहाँ से हर बार कोई नया बहाना बना कर, नये आश्वासनों के साथ बैरंग लिफाफे की तरह लौटा दी जाती हैं. बुआ को ड्राइंग रूम में बैठा कर मैं माँ के स्नान घर से बाहर आने की प्रतीक्षा कर रही थी. उनके आते ही मैंने उन्हें बुआ के आने की सूचना दी थी तो माँ ने मुझे डांट दिया-'अरे कह देती पापा बाहर गए हैं, चार पांच दिन में वापस आयेंगे....जब देखो तब पठान की तरह तकाजा करने चली आती हैं .. उनका पैसा खाना थोड़े ही है, जब होगा तब दे देंगे.'

'अम्मा बुआ को तुम्हारे घर आने का कई शौक नहीं है. अकेली औरत के लिए नक्सलवादी इलाके में रात को बस का सफ़र करना खतरे से खाली भी नहीं है...किन्तु बेचारी मजबूर हैं. जब तक तुम उनका पैसा नहीं लौटाओगी इसी तरह उन्हें धक्के खाने पड़ेंगे .... पापा से कह कर उनके रुपये अब तो वापस करा दो माँ. अब तक तो बैंक में भी उनके पैसे डबल हो जाते, यहाँ तो उनका मूल धन भी फंस गया है.

'अच्छा! तेरे को इतना पढाया लिखाया, अब तो तू हमें ही कानून पढाने लगी है और गैरों की तरफदारी करने लगी है.

'वो गैर नहीं हैं अम्मा. जो रिश्ता तुम्हारा मामा से है, वही रिश्ता बुआ का पापा से है. जब मामा गैर नहीं हैं तो बुआ गैर कैसे हो गई?'

'अम्मा बुआ को तुम्हारे घर आने का कई शौक नहीं है. अकेली औरत के लिए नक्सलवादी इलाके में रात को बस का सफ़र करना खतरे से खाली भी नहीं है. जब तक तुम उनका पैसा नहीं लौटाओगी इसी तरह उन्हें धक्के खाने पड़ेंगे.

'श्रीलता, तेरी जवान आज कल बहुत चलने लगी है. तेरी ही वजह से उसका पैसा फंसा रखा है. उसका बेटा राघव डाक्टरी की पढाई कर रहा है.चिराग लेकर ढूंढने पर भी वैसा लड़का अपनी बिरादरी में नहीं मिलेगा और मिल भी गया तो लाखों रुपयों की मांग होगी. मैं तेरी शादी उससे करना चाहती हूँ. हमें उसका एक पैसा नहीं रखना है, ब्याज के साथ सब लौटा देंगे. मैं तो सोचती थी कात्यायनी की शादी भी हम ही करा दें. एक रिश्ता लेकर तेरे पापा हैदराबाद उनके पास गए भी थे. माँ बोले तो बोले उनकी बेटी कात्यायनी ने भी तेरे पापा की कैसी इज्जत उतारी थी. क्या नहीं कहा उनसे ?...कहा था मामा तुम्हारा नाम दया शंकर नहीं कंस मामा होना चाहिए था जो अपनी बहन और उसके बच्चों का दुश्मन बना है. एक बच्चे के बाप, जिसकी बीबी ने जल कर आत्म हत्या करली थी, उस से मेरी शादी करना चाहते हो?... कितनी दलाली मिली है तुम्हे? बहुत अच्छा है तो उससे अपनी बेटी की शादी क्यों नहीं करा देते?'

'कात्यायनी अक्का ने कुछ गलत नहीं कहा अम्मा. मेरे लिए कोई ऐसा रिश्ता लाता तो मैं भी ऐसा ही कहती. अम्मा ऐसा कौन सा एब है जो उस आदमी में नहीं है... तंग आकर उसकी पत्नी ने आत्महत्या करली थी और पापा उससे कात्यायनी अक्का की शादी कराने की सोच रहे थे...ऐसा तो कोई दुश्मन ही कर सकता है, शुभचिन्तक नहीं.' अम्मा बुआ के पास चली गई थीं.

बिना पढ़ी लिखी मेरी माँ इतनी षडयंत्रकारी और जालिम हो सकती हैं देख कर मुझे अचरज होता है. तभी ड्राइंगरूम से माँ ने मुझे पुकारा था 'श्री लता बुआ के लिए चाय नाश्ता ले कर आ'...मैं समझ गई थी कि बुआ को शादी के लिए पटाना है इसीलिए उनकी आवभगत की जा रही है

अम्मा की आवाज मुझे रसोई घर में भी सुनाइ दे रही थी-'राघव की शादी के बारे में क्या सोचा है तुमने? मुझे वह बहुत पसंद है. मैं श्री लता की शादी राघव से करना चाहती हूँ ... अपनी श्रीलता भी देखने में सुन्दर है बी.ए. पास है...पैसे की चिंता तुम मत करो. तुम्हारे भाई तुम्हारा पैसा लौटने के लिए परेशान हैं. एक जमीन बेचने को तैयार हैं...अच्छा ग्राहक मिलते ही सौदा कर देंगे और वह पैसे तुम्हें ही देंगे.' **क्रमश......**

वैज्ञानिक गौसम्वर्धन

गौ संवर्धन कार्य में तीव्रता नगण्य है. पशु क्या मनुष्य के लिए भी भयंकर दुष्काल की स्थिति है. यदि यहाँ परिस्थिति की भयंकरता और दाता की उदारता दोनों की तुलना की जाए तो "ओस चाटने से प्यास नहीं बुझती" वाली सुक्ति सिद्ध होती है.

-कृष्णचन्द्र टवाणी,
प्रधान संपादक, अध्यात्म अमृत,
किशनगढ़, राजस्थान

आज हमारा उद्योगपति वर्ग तथा सरकार राष्ट्र को सर्वतोमुखी श्री सम्पन्न बनाने में प्राण-प्रण से लगा है. राष्ट्र पर आने वाली प्रत्येक मुसीबत में लाखों, करोड़ों रूपये व्यय करके मदद कर रहे हैं. राजस्थान में पशु क्या मनुष्य के लिए भी भयंकर दुष्काल की स्थिति है. यदि यहाँ परिस्थिति की भयंकरता और दाता की उदारता दोनों की तुलना की जाए तो "ओस चाटने से प्यास नहीं बुझती" वाली सुक्ति सिद्ध होती है.

आज के इस वैज्ञानिक युग में जहाँ उद्योग धंधे, कृषि व्यापार इत्यादि में तीव्र प्रगति के लक्षण दिखाई दे रहे है. वहाँ गौ संवध र्न कार्य में तीव्रता नगण्य है. कच्छप गति भी नहीं आयी है. अभी राजस्थान में कई स्थानों पर सूखा तथा अकाल की स्थिति है सभी ने अपना-अपना सहयोग दिया है. किसी ने हजार तो किसी ने लाख रूपये सहायतार्थ दिये है. परंतु इससे क्या समस्या का ठीक निराकरण संभव है? मुझे प्रस्तुत संदर्भ में अंग्रेज कवि की एक कविता याद आती है. कविता में एक छोटा सा किस्सा है- एक निस्सहाय व्यक्ति रास्ते के किनारे बीमार पड़ा था. वह चर्म पीड़ा की असह्य वेदना से कराह रहा था. रास्ता चालू था. सैकड़ों व्यक्ति वहाँ उसे देखकर करूणा आह भरते निकलते थे. एक व्यक्ति द्रवित हुआ तो स्वर्ण सिक्का उस पीड़ित के सामने फेंककर चलता बना. वह व्यक्ति समझा कि हमने अपना फर्ज अदा कर दिया. दूसरे राहगीर ने उस बीमार व्यक्ति को कुछ नहीं दिया वह उस पीड़ित व्यक्ति को सराय में ले गया, उसने डॉक्टर को बुलाकर उसे दिखाया, रोगानुकूल दवा की व्यवस्था की और उसकी सेवा सुश्रूषा की. इस तरह वह चन्द दिनों में ही रोग मुक्त हो गया.

कवि को लगा कि सहानुभूति स्वर्ण सिक्कों से श्रेष्ठ है. आज के इस पैशाचिक वातावरण में गाय हमसे सहानुभूति मांग रही है. वह मूक जननी है. आत्म चिंतन के एक्सरे द्वारा उसके जख्म (समस्या) को ठीक-ठीक चिन्हित करना चाहिए और तद्नुकूल ऑपरेशन (निराकरण) से उसे अच्छा करना चाहिए. अर्थात समस्या को गहराई से समझना चाहिए और निराकरण की बुनियादी पहलू ढूंढना चाहिए. जख्में जिगर और नस्तरे उदर से सारा काम बिगड़ेगा.

मुझे तो लगता है कि वैज्ञानिक सहानुभूति से गौ संवर्धन का चमत्कार जल्दी प्रकट होगा. जो सहानुभूति करूणापूर्ण तथा रचनात्मक हो उसे वैज्ञानिक सहानुभूति कहेंगे. भगवान गोपाल कृष्ण को गोसंवर्धन के लिए अर्जुन से कुछ मांगना नहीं पड़ा था. अपने सद्भावपूर्ण सद्प्रेम वैज्ञानिक सहानुभूति और सद्प्रयास से गोपाल कृष्ण ने गोसवंर्धन किया था.

गाय के लिए उत्तम सांड प्राप्त करने का स्त्रोत बनाना चाहिए. जो भावी गायें बनेगी उन्हें खूब दूध ा पिलाकर सबल और पुष्ट बनाना चाहिए. फिर उन्हें परमोत्तम गुण धर्म वाले सांड से संयोग कराना चाहिए. एक प्रदीप से जैसे सहस्त्र प्रदीप प्रज्चलित किये जा सकते है वैसे ही वैष्टिय गुण संपन्न वृषभ से सहस्त्र उत्तमोत्तम वृषभ बनाकर गोसंवर्धन की अखंड श्रृंखला को बढ़ा सकते हैं. यही गो संवर्धन का बुनियादी सूत्र और कुंजी है. सांड गोवंश का आधार होता है. इस कार्य के लिए एक संगठित अभियान चलाना चाहिए. हमारे यहाँ उत्तमोत्तम सांड की कमी है. प्रत्येक गौशाला में कम से कम एक उत्तम सांड तो होना चाहिए. परंतु इसके लिए गोपाल कृष्ण बनकर कार्यरत होने की

जरूरत है. इसी से यह कार्य सधेगा. आज गौ संवर्धन कार्य को उद्योगपति बड़ी सहजता से आगे बढ़ा सकते हैं उनमें तो सम्पन्नता के साथ-साथ बौद्धिक कुशलता भी है. फैक्ट्री में कहीं कुछ त्रुटि नजर आती है तो हजारों लाखों खर्च करके देश-विदेश से विशेषज्ञ को बुलाकर ठीक करवाते हैं. उसी प्रकार गौ संवर्धन के लिए प्रांतीय और राष्ट्रीय स्तर पर एसोसिएशन होना चाहिए. योग्य कार्यकर्त्ता को गोसवंर्धन सम्मेलन में और आदर्श गौशाला में भेजकर विशिष्ट ज्ञान लाभ का सुअवसर देना चाहिए. उन्हें विदेश भेजकर भी गोपालन ज्ञान को बढ़ाने तथा वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करने का मौका देना चाहिए. इससे गोपालन कार्य को एक नयी दिशा मिलेगी. आज भारत की कुछेक गौशालाओं को छोड़कर बाकी सभी गौशालाएँ ऐसे व्यक्तियों के प्रबंध व सुनिश्चित योजना के अभाव में भार बनी हुई है. वैज्ञानिक ढंग से भिन्न-भिन्न जाति की गायों को खिलाने और उनकी नस्ल सुधारने की कोई पहले से सोची हुई सुनिश्चित नीति नहीं होती. दिशाहीन और गन्तव्य शून्य गौशालायें चलती हैं. केवल कुछ दूध प्राप्त कर गौशाला के अस्तित्व को समझने का विभ्रम चल रहा है. गौशाला का गुणात्मक और परिमाणात्मक गुणनफल समय के साथ बढ़ता है या नहीं यह दृष्टि ओझल है. अतः गौशाला का लक्ष्य और उद्देश्य सामने रहने पर आगे बढ़ना सरल और सहज हो सकता है.

आज के भारत में वैज्ञानिक ढंग से गौशाला का समुन्नयन करना यहाँ के इतिहास के लिए सबसे बड़ी घटना होगी और समुन्नयनकर्ता इस ऐतिहासिक घटना का अमर सुपात्र (दीप) कार्य (गो संवर्धन) को अपनी बौद्धिक कुशलता से आगे बढ़ाने की भरसक चेष्टा करेगा.

शबनम शर्मा, सिरमौर, हिमाचल प्रदेश की लघु कथाएं

दिन हौसला

सुबह का वक्त था. जनवरी का महिना. लखनऊ की ठंड. मैं छत पर जाकर बैठ गई. मन बहुत उदास था. मेरी बेटी मात्र 8 महिने की थी और बेटा 12 साल का. मेरे पति को फौज से रिटायरमेंट मिल गई थी. रोटी के लाले पड़ गये थे. कभी अपनी गोद में आई बेटी को देखती तो कभी मझधार में खड़े बेटे को. पति की मायूसी भी मुझसे देखी न जा रही थी. आगे के समय को सोच-सोचकर मन बैठा जा रहा था. मेरी उम्र मात्र 32 बरस की थी. अब क्या करेंगे? कैसे काटेंगे आगे का समय? यही सोचकर आँखों से आँसू सूख नहीं रहे थे. अपना मकान भी न था जहाँ सिर छुपा सके.

मेरा शरीर और मन दोनों ही परेशान थे कि बाजू वाली अम्मा जी भी छत पर कपड़े सुखाने आ गई. उन्हें मेरी पूरी परिस्थिति के बारे में खबर थी. वो मेरे पास आकर बैठ गई और बोली, ''बेटी, सोचने या रोने से कभी कोई काम नही होता. इसके लिये हमें सही दिशा ढूंढनी होगी. तू तो पढ़ी-लिखी है कुछ भी कर सकती है. जब मेरे पति मुझे छोड़ कर गये तो मेरे 5 बच्चे, बूढ़ी सास-ससुर और मैं. कैसा-कैसा समय निकाला, लोगों के स्वैटर बुने, बर्तन मांजे, घर लीपे, फिर समय मिलता तो दरियाँ बुनती. आज मेरे बच्चे बड़े हो गये हैं, मैं आराम से हूँ. बेटी, वक्त कभी एक सा नहीं रहता और सुन अच्छा है ये वक्त जवानी में आया, बुढ़ापा सुखी होगा. आँसू पोंछ और सोच करना क्या है?'' उनकी इस बात ने मेरी सोच, जिन्दगी ही बदल दी.

प्यास

बात उन दिनों की है जब मंडल कमीशन का काफी शोर था. जगह-जगह बंद चल रहे थे. इस बीच मुझे लखनऊ जाना पड़ गया. जरूरी काम था. मैं सामान समेट कर चल पड़ी. मेरे साथ मेरा ४ बरस का बेटा भी था. हम देहरादून से रवाना हुए. ट्रेन रात को साढ़े आठ बजे के करीब चली. मन में एक अजीब सा डर बैठा था. 2–3 जगह ट्रेन रुकी. गंतव्य तक पहुँचने में काफी लेट हो गई. मेरा बच्चा बार-बार कुछ खाने या पीने को माँग रहा था. मैंने जो कुछ सामान रखा था लगभग खत्म हो गया था. रास्ते में कोई ट्रेन में कुछ बेचने भी न आ रहा था. उसे जोर की प्यास लगी, वो रोने लगा. मेरे पास रखा पानी भी खत्म हो गया था. मैं उसे सांत्वना दे रही थी, अभी लखनऊ आने वाला है, ठंडा पानी भी आएगा. पर उसकी प्यास गरमी की वजह से काफी बढ़ गई थी. मेरे सामने एक बुजुर्ग बैठे थे उन्होंने अपने झोले से (थैले से) एक पानी की बोतल निकाली व बोले, ''बेटी मैं बहुत देर से इस बच्चे को परेशान होते देख रहा हूँ, मेरे पास पानी है पर मैं मुसलमान हूँ, बता रहा हूँ कहीं आप वहम करे, आप चाहे तो पानी पिला सकती हैं.'' मेरे से पहले मेरा बेटा बोतल पर झपट पड़ा, उसने गट-गट पानी पिया. मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े. मैंने कहा, ''चाचा कभी पानी भी हिन्दू या मुसलमान होता है. आपने ऐसा क्यूँ सोचा? ये तो सिर्फ प्यास बुझाता है. शुक्रिया चाचा, बहुत-बहुत शुक्रिया.''

–अखिलेश निगम 'अखिल', लखनऊ, उ.प्र. की लघु कथाएं

लेकिन क्यों?

''क्या आप लोगों ने इसके पहले अपनी बहू का कहीं एबार्शन कराया है?'' डॉ० कामिनी ने रत्ना की विभिन्न जाँच रिपोर्टो को देखने के बाद उनके सास-ससुर से पूछा.

'हाँ, हम लोगों ने दो वर्ष पूर्व रत्ना का एबार्शन कराया था.

रत्ना की सास बोली.

'आखिर क्यों?'

'वह इसलिए कि उसके गर्भ में लड़की पल रही थी और हम लोग अपने परिवार में लड़की के बजाय लड़का चाह रहे है.''

'लेकिन अब तो अब कुछ समाप्त हो गया.''

'क्या मतलब?' रत्ना के ससुर ने पूछा.

'रत्ना को तो आप लोगों ने बिल्कुल बाँझ बना दिया.' समस्त जाँच रिपोर्टों को वापस करते हुए डॉ० कामिनी ने कहा.

'नही!' माथा पकड़कर रत्ना और उनका परिवार वही पर बैठ गया.

चीख

''मैं अभी माँ नहीं बनना चाहती.''

''क्यों?'

''क्योंकि माँ बन जाने पर मेरा फिल्म एवं माडलिंग का कैरियर खत्म हो जाएगा.''

''लेकिन माँ बनना तो नारी की सम्पूर्णता है.''

''फिर वहीं दकियानूसी बातें...''

''लेकिन हम लोगों को पापा-मम्मी की इच्छा का भी तो सम्मान करना है.''

''मैं परिवार की खुशी के लिए अपने भविष्य को दॉव पर नहीं लगा सकती.''

''तो तुमने क्या सोचा है?''

'एबार्शन.'

''नहीं ...''

पत्नी के इस निर्णय पर उसकी चीख हवा में गूँज गई थी।

कुत्ते की संगति

एक आदमी जानवर का शिकार करने के लिए जंगल गया उस जंगल की रखवाली का दायित्व दो कुत्तों को दिया गया था. आदमी को देखकर दोनों कुत्ते दूर से ही अपनी-अपनी पूँछ उठाए भौंकने लगे. आदमी पहले तो भयभीत हुआ फिर अपना बल्लम उठाकर बड़ी तेजी से उन्हें मारने के लिए दौड़ा अपनी जान को संकट में जानकर कुत्तों ने झट से पाला बदला और भौंकना बन्द कर अपनी-अपनी पूँछ हिलाने लगे और अपने अपने पिछले दो पैरों पर बैठकर अपने अगले दोनों हाथ जोड़कर करबद्ध प्रार्थना की फिर उनके सामने पीठ के बल लोटने-पोटने लगे. यह देखकर आदमी को दया आ गई और उन्हें छोड़ दिया, तभी जंगल में कुछ खरगोश दिखाई दिए, आदमी उनको मारने के लिए दौड़ा साथ ही कुत्तों ने भी उन्हें दौड़ा लिया. आदमी तो असफल रहा किन्तु एक कुत्ते ने भोला-भाला एक जिन्दा खरगोश को पकड़कर आदमी के सामने ही उसे बेदर्दी से मारकर आदमी को खाने के लिए दे दिया फिर पूँछ हिलाकर कूँकूँ करने लगा, इस पर आदमी ने खरगोश का बचा हुआ माँस का टुकड़ा कुत्ते के सामने खाने के लिए फेंक दिया जैसे ही वह खाने के लिए बढ़ा दूसरा कुत्ता जो कि पहले वाले से अधिक मोटा तगड़ा था, माँस के टुकड़े पर गुर्राते हुए झपट पड़ा और उसे खा गया। आदमी यह देखता रहा ज बवह जंगल से चलने लगा तो दूसरा कुत्ता भी आदमी के पीछे-पीछे उसके घर पर आ गया। उसकी संगति से आदमी में भी दूसरे आदमियों के प्रति घष्णा ईर्ष्या, द्वेष, आपसी मनमुटाव एवं नफरत के बीज का अंकुरण हुआ तथा स्वार्थ लोलुपता एवं चमचागीरी की प्रवृत्ति ने जंन्म लिया।

जिंदगी में दो व्यक्ति जीवन की नयी दिशा दे जाते है, एक वह जो मौका देता है, दूसरा वह जो धोखा देता है.....!!

हिंदी के व्यापक प्रचार-विकास में देवनागरी की भूमिका

-गणेश प्रसाद महतो

सर्वविदित है कि स्वतंत्रता-क्रांति अभियान को सफल बनाने में हिंदी की प्रमुख भूमिका रही थी. इसी माध्यम से देश के विभिन्न भाषा-भाषियों के मध्य समपूर्ण विचार-विनिमय संभव हो सका था. फलतः सभी एकजुट हो क्रूर-अत्याचारी दुर्जेय अंग्रेजी को खदेड़ भगाने में कामयाब हो सके थे. कहा गया हैं-**संघे शक्ति कलियुगे**। इस आलोक में आजादी बाद हिंदी को सुगम-सुबोध फलतः सर्वसुलभ जानकर ही विभिन्न भाषा-भाषी महापुरूषों व नेताओं ने तहेदिल से इसे राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन किया. ताकि देश में एकता, फलतः देश का अस्तित्व-अखंड़ता बरकरार रहे.

भले ही केंद्र सरकार की उदासीनता -लापरवाही के कारण शुरू-शुरू में राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को यथोचित सम्मान नहीं मिला जिस कारण अहिदी भाषी इसे अपनाने-सीखने से कतराते ही नहीं, विरोध भी करते रहे. हर्ष की बात हैं कि कुछ समयोपरांत वे भी देशहित में इसकी महत्ता-अनिवार्यता को स्वीकार लिये. परिणामस्वरूप कुछ वर्षों से देश के कोने-कोने में इसका प्रचार-प्रसार बढ़ता रहा है. भारत ही नहीं, विश्व के अधिकांश देशों ने भी इसकी उपयोगिता को स्वीकारकर अपने शैक्षिक पाठ्यक्रमों में स्थान देने लगे. इतना होते हुए भी मेरे ख्याल से हिंदी के व्यापक प्रचार-विकास हेतु सभी भारतीय भाषाओं को लिखने-पढ़ने में देवनागरी का उपयोग परमावश्यक हैं. क्योंकि संभवतः बहुत से अहिंदी भाषियों का हिंदी से मुकरने का कारण देवनागरी में लिखा जाना हो सकता है. इसलिए कि अपनी मातृभाषा की लिपि सीखना, अंग्रेजी मोह के कारण रोमन लिपि सीखना. फिर हिंदी के लिए देवनागरी सीखना. इस प्रकार आम नागरिकों के लिए तीन-तीन लिपियॉ सीखना कठिन कार्य हो जाता हैं. अतः सभी भारतीय भाषाऍ नागरीलिपि में लिखी जाने की हालत में उनकी मातृभाषा की लिपि सीखने का झमेला ही खत्म हो जायेगा. नागरी में अन्यान्य भारतीय भाषाओं को लिखने का दूसरा लाभ यह होगा कि हिंदी भाषी भी उन्हें शौक-चाव से पढ़ेगे, उन भाषाओं के साहित्य का अस्वाद लेंगे तथा उन प्रांतों के विशेष रीति-रिवाजों से अवगत भी होगें. साथ ही, उन भाषाओं के मनपसंद-प्रभावी शब्दों को हिंदी बोलचाल व साहित्य सृजन में स्थान भी देंगे. इस तरह अन्यान्य भारतीय भाषाओं के शब्द भी हिंदी में घुलते-मिलते जायेगे. इसका दूरगामी परिणाम होगा कि भावी पीढ़ियों में हिंदी-अहिंदी का अंतर समाप्त हो जायेगा. आजादी प्राप्ति समय भी बहुत-से महापुरूषो ने हिन्दी को देशभर में प्रचलित सभी भाषाओं को एक लिपि (देवनागरी) में लिखने का सुझाव दिया था. आजादी से बहुत पहले भगत सिंह ने भी एक लिपी की चर्चा की थी. कई तो नागरी को राष्ट्रलिपि की मान्यता देने के पक्षधर थे. गांधी जी की दृष्टि में-भारत में भिन्न-भिन्न लिपियों का होना भी ज्ञान प्राप्ति में बाधक हैं. इस संदर्भ में उनका मानना था-अगर टैगोर की कृतियॉ नागरी में छपें तो देश के लोग लाभान्वित हो.

चूंकि एक ही लिपि में कई भाषाऍ लिखी जाती हैं. अंग्रेजी जैसी विश्व मान्य भाषा रोमण लिपि में लिखी जाती है. नागरी में पहले से ही हिंदी के अलावें अवधी, ब्रज भोजपुरी, मगही, अंगिका इन्यादि कई भाषाऍ लिखी जाती हैं. यहॉ तक कि संस्कृत भी. तो अन्यान्य भाषाऍ लिखने में क्या हर्ज हैं? संक्षेप में, लिपि अपनाने से निम्नलिखित फायदे हैं-

१) अहिंदी भाषियों को अपनी-अपनी मातृ भाषा की लिपि सीखने से छुटकारा मिल जायेगी.

२) बहुत-से हिंदी भाषियों को अन्यान्य भारतीय भाषाओं के साहित्य पढ़ने की ललक-ललसा होती हैं। नागरी में रहने से सुग्म-सुलभ हो जायेगा।

३) हिंदीतर भाषी नागरी सीख लेंगे तो हिंदी के प्रति उनकी उदासीनता समाप्त हो जायेगी, लिखने-पढ़ने में दिलचस्पी लेंगे। फलतः हिंदी जानने वालों की संख्या दिन दूनी, रात चौगनी बढ़ती जायेगी।

४) जैसे संस्कृत, भोजपुरी, अवधि इत्यादि के शब्द हिंदी में घुल-मिल गये हैं उसी तरह अन्यान्य भारतीय भाषाओं के शब्द भी समाहित होते जायेगें.

देश के अधिकांश भाषाओं के अपनी-अपनी लिपियॉ हैं. पर नागरी ही राष्ट्रलिपि क्यों? इसलिए कि इसकी निम्नांकित विशेषताऍ हैं-यह लिपि पूर्णतः वैज्ञानिक है, इसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग-अलग संकेत (वर्णाक्षर) हैं, यह लिपि अक्षरात्मक -वर्णात्मक दोनों रूप की है, इसमें जो बोला जाता हैं, वही लिखा पढ़ा भी जाता है, इस लिपि में शिरोरेखा देने का प्रचलन है. इससे किसी शब्द के सारे वर्णाक्षर एक समूह में हो जाते हैं. फलतः पढ़ने में कठिनाई नहीं होती हैं.

डायबिटीज के पूर्व संकेत

हमारे यहां डायबिटीज तेजी से अपने पैर पसार रहा है। महिलाएं भी काफी तादाद में इसकी गिरफ्त में हैं। अच्छी बात यह है कि महिलाओं के शरीर में इस बीमारी के लक्षण पहले से ही दिखने लगते हैं।

डायबिटीज से बनी रहे दूरी

☞30 से ऊपर को महिलाएं हों या पुरुष, उनकी साल में एक बार डायबिटीज का टेस्ट जरूर करवाना चाहिए.

☞डायबिटीज हो या न हो, ये टेस्ट कराना स्वस्थ जीवन का नियम मान लें.

☞जिनको डायबिटीज है उन्हें नियमित रूप से एक घंटा व्यायाम जरूर करना चाहिए.

☞बैठ कर किए जाने वाले व्यायाम की जगह ऐरोबिक्स और साइकलिंग करें. टहलने से भी इस बीमारी से राहत मिलती है.

☞डायबिटीज नही है तो इससे दूरी बनाने के लिए प्रतिदिन 30 मिनट का व्यायाम जरूरी है.

☞डायबिटीज से बचने के लिए अपनी डाइट में कार्बोहाइड्रेट युक्त खाद्य पदार्थो को कम मात्र में शामिल करें. आहार में प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थो को कम मात्रा में शामिल करे. आहार में प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थ जैसे दाल, दूध, पनीर व दही आदि प्रचुर मात्रा में शामिल करे.

☞डायबिटीज से बचने के लिए मीठे का सेवन संतुलित मात्रा में करे.

प्रत्येक 10 में से 1 महिला डायबिटीज की षिकार होती है. यह आंकड़े इंटरनेशनल डायबिटीज फेडरेशन के आंकड़े कहते है. जब डायबिटीज किसी को हो जाए तो लगता है कि मानो पूरी जिंदगी बदल गई है. महिलाओं पर खासतौर पर इस बीमारी का असर होता है, क्योंकि प्रेग्नेंसी में इसका खतरा बढ़ जाता है. पर बीमारी की गंभीरता की बातों के बीच भी सकरात्मक बात यह है कि महिलाओं में इसके लक्षण थोड़े अलग होते है और पहले से नजर आने लगते हैं. इन लक्षणों पर ध्यान दिया जाए और जरूरी कदम उठाए जाए, तो काफी महिलाएं इसकी चपेट में आने से बच सकती है.

यूटीआई नहीं मामूलीः मुत्र मार्ग में संक्रमण यानी यूटीआई हो जाना महिलाओं की सेहत से जुड़ी आम समस्या है. मूत्रालय और किडनी पर इस इंफेक्षन का गहरा प्रभाव पड़ता है. अक्सर जरा-सी भी हाइजीन की मी को यूटीआई का कारण मान लिया जाता है. पर, यह पूरी तरह से सही नहीं है. बार-बार यूटीआई होने की वजह से डायबिटीज की दस्तक भी हो सकती है और इसकी वजह बनता है शरीर से ग्लूकोज का बिगड़ा हुआ स्तर. अगर आपको बार-बार यूटीआई हो रहा है तो अपना शुगर जरूर जांच करवाएं.

त्वचा में फंगल इंफेक्शनः त्वचा में फंगल इंफेक्शन होना आम समस्या मानी जाती है. बारिश के मौसम में अक्सर यह बीमारी हो जाती है. पर, तेज गर्मी या ठंड वाले मौसम में भी आपको फंगल इंफेक्शन हो रहा है तो डॉक्टर से परामर्श जरूर लें. बार-बार फंगल इंफेक्शन होना डायबिटीज का भी लक्षण है. समय रहते इसको पहचानना जरूरी है. ध्यान रखें, इसमें लाल और गोल चकते पड़ जाते हैं, जिन पर खुजली भी बहुत होती है.

बार-बार टॉयलेट के चक्कर : डायबिटीज से जुड़ा यह एक ऐसा लक्षण है, जो पुरुषों और महिलाओं दोनों में समान रूप से नजर आता हैं डायबिटीज होने पर बार-बार पेशाब आती है। खासतौर पर रात में ऐसा बार-बार होता है। अगर ये जल्दी-जल्दी हो रहा है तो डायबिटीज का टेस्ट करा लेने में ही समझदारी होती है। ध्यान ये रखना है कि एक आम इंसान २४ घंटे में ६ से ७ बार पेशाब जाता है। अगर औसतन आप हर दिन इससे ज्यादा बार पेषाब करने जाती है, तो ये आपके लिए सतर्क हो जाने वाली स्थिति है।

तलवों में जलन : त्लवों में अक्सर जलन होना भी डायबिटीज का लक्षण होता है। जलन होना कोई खास बात नहीं है क्योंकि ऐसा विटामिन बी-१२ और बी६ की कमी के चलते भी होता है। पर, जब मल्टीविटामिन लेने के बाद भी समस्या ठीक नहीं हो तो डॉक्टर को जरूर दिखा लें। तलवों में जलन डायबिटीज का लक्षण इसलिए है क्योंकि यह एक न्यूरोपैथ समस्या है और इसमें नसें कमजोर हो जाती है।

जेस्टेशनल डायबिटीज भी है खतराः जेस्टेशनल डायबिटीज सिर्फ गर्भवती महिलाओं को ही होती है और बच्चे के जन्म के बाद खत्म भी हो जाती है पर इसका असर गर्भ के षुरू से नहीं दिखता है. इस डायबिटीज का लक्षण गर्भ ठहरने के २६वें हफ्ते के बाद दिखता है. इसका कोई लक्षण पहले से नहीं दिखता. षुगर बढ़ने पर गर्भवती महिलाओं का मुंह सूखता है, त्वचा भी रूखी हो जाती है और इंफेक्शन भी हो जाता है। १० प्रतिशत महिलाओं को इसका सामना करना पड़ता है। पर, इन महिलाओं को बाद में भी डायबिटीज होने का खतरा रहता है।

प्रविष्टियां आमंत्रित है

काव्य के क्षेत्र में: कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना), स्व.किशोरी लाल सम्मान (श्रृंगार रस की एक रचना पर), महादेवी वर्मा सम्मान (छायावादी रचना पर) **गद्य के क्षेत्र में**: डॉ. रामकुमार वर्मा सम्मान (नाटक) उपेन्द्र नाथ अश्क सम्मान (कहॉनी/उपन्यास/लघु कथा) **हिन्दी सेवी सम्मान**-ऐसे व्यक्ति जो किसी भी प्रकार से हिन्दी सेवा कर रहे हों अथवा हिन्दी का प्रचार/प्रसार, हिन्दी के विकास के लिए कार्य कर रहे हों। **समाज सेवा के क्षेत्र में**: समदर्शी पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान-ऐसे व्यक्ति जो कम से कम गत 5 वर्षो से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान दे रहे है. **कलाश्रीः** (कला/संस्कृति/लोकनृत्य/शास्त्रीय संगीत/अभिनय/संगीत/पेंटिग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए), **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान/राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान** -(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी अन्य क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) (युवाओं की उम्र 35 वर्ष से कम हो) **विशेषः** १. प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और 150 रुपये मात्र का धनादेश/डाक टिकट आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा. २.रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी. ३. निर्णायंक मण्डल का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा. किसी प्रकार के विवाद के सदर्भ में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

अंतिम तिथिः 30 नवम्बर 2019

अध्यक्ष,
श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति सेवा समिति
65ए/2, लक्सों कंपनी के सामने, रामचन्द्र मिशन रोड,
धूमनगंज, इलाहाबाद-211011, उ.प्र.,
मो०: 09335155949, ईमेल-psdiit@rediffmail.com

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक

एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद–211011, मो0: 9335155949

एक प्रति–15/रुपये, वार्षिक–150/रुपये, पंचवर्षीय –700/रुपये, आजीवन–2100/रुपये

प्रेरणादायी 'उम्मीद और विश्वास' पुस्तक निःशुल्क वितरित

लखनऊ. तेज ज्ञान फाउण्डेशन, पुणे के लखनऊ सेन्टर द्वारा मानसी फैशन एण्ड कम्प्यूटर इन्स्ट्टीयूट की छात्राओं को प्रेरणादायी पुस्तक 'उम्मीद और विश्वास' उपहार स्वरूप वितरित की गयी. बेस्टसेलर पुस्तक 'विचार नियम' के रचनाकार सरश्री द्वारा 'विचार नियम के आधार उम्मीद और विश्वास' पुस्तक लिखी गयी है। फाउण्डेशन की ओर से लखनऊ सेन्टर के सत्याचार्य तथा खोजी मुकेश शर्मा, श्रीमती गुंजन तिवारी, मनीष श्रीवास्तव तथा प्रदीप कुमार सिंह शामिल हुए.

इस अवसर पर सत्याचार्य मुकेश शर्मा ने कहा कि अपने जीवन में सफलता पाने के लिए अपने विचारों पर कार्य होना जरूरी है. विश्व का हर एक इंसान अपनी उच्चतम संभावना खोल सकता है, जो चाहिए वह पा सकता है। बस, जरूरी है अपने विचारों को एक दिशा में लाना और उसकी शक्ति का समझना.

सत्याचार्या श्रीमती गुंजन तिवारी ने कहा कि जीवन की बड़ी सफलता की छोटी मगर मुख्य कड़ी उम्मीद है. उम्मीद सुखी जीवन की वह अनकही कड़ी है, जो छोटी होने पर भी जीवन का मुख्य आधार है.

फाउण्डेशन के खोजी मनीष श्रीवास्तव ने बताया कि तेज ज्ञान फाउण्डेशन एक चॅरीटेबल संस्था है, जिसे आई. एस.ओ. 9001–2015 से प्रमाणित किया गया है और यह विश्व में पहली आध्यात्मिक संस्था है, जिसे यह सम्मान मिला है।

अन्त में श्रीमती मुक्ता तिवारी, डायरेक्टर तथा संजीव कुमार षुक्ला, मैनेजिंग डायरेक्टर, मानसी फैषन एण्ड कम्प्यूटर इन्स्ट्टीयूट ने तेज ज्ञान फाउण्डेषन के प्रति अपना आभार प्रकट किया.

श्रेयसी चौहान का तीन विदेशी विश्वविद्यालयों में चयन

लखनऊ. सिटी मोन्टेसरी स्कूल, महानगर कैम्पस की मेधावी छात्रा श्रेयसी चौहान ने उच्च शिक्षा हेतु आस्ट्रेलिया एवं कनाडा के तीन प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में चयनित होकर विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया है. श्रेयसी ने आस्ट्रेलिया की द यूनिवर्सिटी ऑफ क्वीसलैंड एवं डेकिन यूनिवर्सिटी एवं कनाडा की यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलम्बिया में अपनी मेहनत, लगन व शैक्षिक प्रतिभा की बदौलत उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त किया है। सी.एम.एस. के मुख्य जन-सम्पर्क अधिकारी श्री हरि ओम शर्मा ने बताया कि विगत वर्षो की भाँति इस वर्ष भी सी.एम.एस. के मेधावी छात्रों ने सर्वाधिक संख्या में विदेशों के सर्वश्रेश्ठ विष्वविद्यालयों में चुने जाने की रिकार्ड बनाया है।

जगदीश गांधी को 'लाइफटाइम एचीवमेन्ट अवार्ड'

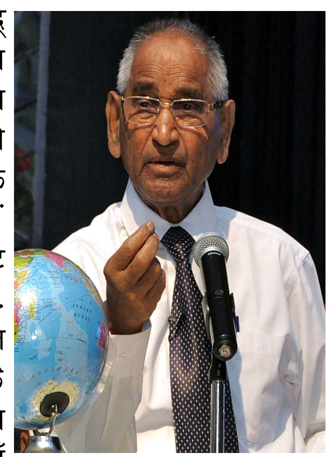

लखनऊ, प्रख्यात शिक्षाविद् एवं सिटी मोन्टेसरी स्कूल के संस्थापक डा. जगदीश गाँधी को ६ अक्टूबर को थाईलैण्ड में आयोजित एक भव्य समारोह में 'लाइफटाइम एचीवमेन्ट अवार्ड' से नवाजा जायेगा. अन्तर्राष्ट्रीय संस्था 'ग्लोबल एचीवर एलायन्स' के तत्वावधान में यह आयोजन किया जा रहा है, जहाँ डा. गाँधी को शिक्षा के द्वारा विश्व एकता एवं विश्व शान्ति के अतुलनीय प्रयासों हेतु सम्मानित किया जायेगा। इसके अलावा, देश-विदेश की कई अन्य प्रख्यात शख्सियतों को भी सम्मानित किया जायेगा. इस अवसर पर थाईलैण्ड की राजकुमारी मोम लुआंग राजदर्शी जयंकुरा मुख्य अतिथि होंगी जबकि थाईलैण्ड की शाही फौज के सुप्रीम कमाण्डर विशिष्ट अतिथि होंगे.

समीक्षा

नव अर्श के पांखी

मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी द्वारा पांडुलिपि पुरस्कार से पुरस्कृत इस कृति की रचनाकार हैं, साहित्यकार, कवयित्री, एंकर, 'अनुपमा श्रीवास्तव 'अनुश्री'. यह उनका दूसरा काव्य संग्रह है 'नव अर्श के पांखी'. छह भागों में समाहित लगभग नब्बे कविताएं हैं, जो जीवन के विविध आयामों, पहलु को छूते हुए जीवनदायिनी प्रकृति के उत्कट सौंदर्य, प्रेम की उच्चता और अध्यात्म को स्पर्श करती हुईं, सामाजिक परिदृष्य के कैनवास पर नई रोशनी, नई आशाएं, नये रंगों, नवाचार और नई उड़ान को लक्ष्य करती है. ये आज की आपाधापी, अनिश्चितता, अवसाद, गला काट प्रतिद्वंदिता, असीमित महत्वाकांक्षाओं के दौर में सकारात्मकता, शांतिपूर्ण सह अस्तित्व, संवेदन युक्त विकास, न्याय पूर्ण सम्यक, मानवोचित व्यवहार, सद्भावना-संवेदनशीलता, इंसानी जज्बों की अहमियत खुशनुमा, पुरसुकून, शांति, सरल-सहज उच्च विचार पूर्ण जिंदगी जीने का उद्घोष करती हैं. सामाजिक सरोकार के आवश्यक मुद्दे, मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापन की जरूरत और वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य को सामने रखते हुए कहीं व्यंग्य पूर्ण शैली है, कहीं कटाक्ष, तो कहीं तर्क सम्मतता, भाव गहनता. डॉ प्रेम भारती जी ने लिखा है-'अनुश्री की कविताओं को पढ़ते-पढ़ते एक अनोखा अहसास अनायास ही अनुभव होने लगता है कि पढ़ने के साथ-साथ भीतर भी कुछ उतर रहा है. कुछ बेहद मीठे ढंग से एक संस्कार जगा जाए, हृदय को तरंगित कर दे, शिराओं में शक्ति दे जाए और मस्तिष्क को कुछ संवेदना जगाने की बात कह दे.' डॉ. मालती बसंत 'अनुपमा की कविताओं का फलक बहुत विशाल है जिसमें अनेक तरह के चित्र उकेरे जा सकते हैं, रंग भरे जा सकते हैं. वर्तमान का कोई विषय अनुश्री ने अछूता नहीं छोड़ा है. प्रकृति, देश प्रेम, मानवता, हिंदी, नारी के सभी रूप, भारतीय संस्कृति, भारतीय सोच से भरी पूरी काव्य रचनाएं हैं. अनुश्री नैसर्गिक कवयित्री हैं जिनकी लेखनी से काव्य धारा झरने की तरह छूटती है और अनेक दिशाओं में फैल जाती है. संदर्भ प्रकाशन से प्रकाशित इस काव्य संग्रह का मूल्य २५०/रुपये है.

काव्य सम्राट
प्रतियोगिता
2019

सम्मानित पाठकों इस अंक के साथ अलग से जोड़े गये 16 पृष्ठ काव्य सम्राट प्रतियोगिता-2019 के प्रथम चरण में चयनित प्रतिभागियों का है. इस चरण में सम्मिलित प्रतिभागियों की रचनाओं पर अपनी राय हमें पत्रिका के ई-मेल आईडी vsnehsamaj@rediffmail.com एवं ह्वाट्सएप नंबर 9335155949 पर निम्न प्रारुप में दिनांक 20.01.2019 तक देने का कष्ट करें. आपकी नजर में कौन सी रचना/रचनाकार प्रथम, द्वितीय या तृतीय स्थान पर है उसकी रचना का नाम या रचनाकार का नाम देने की कृपा करें.

काव्य सम्राट प्रतियोगिता 1— 2— 3—

संपादक

डॉ० राजलक्ष्मी कृष्णन्

जन्मः 07.09.1944

पतिः श्री आर.कृष्णन्

मातृभाषाः तमिल

शिक्षाः बी.एस.सी, हिंदी विशारद, एम.ए, एम.फिल, पी.एच.डी

संपर्क: 23ए, लेवेंडर एपार्टमेंट, मुनुसामी स्ट्रीट, विरुगम्बाक्कम, चेन्नै-600092, तमिलनाडु मो०: 9840041576,

ईमेलः rkrish2000@gmail.com

बूढ़ी माँ

वह बूढ़ी माँ
अँधेरे कोने में, बंद कमरे में
बेपनाह चीज की तरह
पड़ी रहती है।
उसका कमरा धूल से भरा,
और मकड़ियो के जाल से घिरा है।
खाँस-खाँसकर,
उसका बुरा हाल है।
वह अपने दर्द का
बयान नहीं कर सकती

उसके दुःख-दर्द को
समझने वाला कोई नहीं।
अब वह अपने बच्चों के साथ
बिताए गए दिन को
याद कर-कर आँसू बहा रही है।
निर्बल बुढ़ापे की कोई कद्र नहीं।
क्योंकि
आज का युग
मतलबी है, स्वार्थी है।
इस जहाँ में,
मानवता का मूल्य नहीं,
बूढ़ी माँ की कोई कद्र नहीं।
केवल धन-दौलत की कद्र है।

नरेन्द्र श्रीवास्तव

जन्मतिथिः 01.07.1955, **पिताः** श्री जीवनलाल श्रीवास्तव, **शिक्षाः** विज्ञान स्नातक
सम्पर्कः पलोटन गंज, गाडरवारा –487551, नरसिंहपुर, म.प्र., मो०: 9993278808, इमेलः narendrashrivasta55@gmail.com

खामोश भीड़

आकाश में चमकती बिजली
गरजते बादलों के साथ
बरसते मूसलाधार पानी का
छत से टपक-टपककर गिरना।
पूस की सर्द रात में
कड़कड़ाती ठंड में
ओढ़ने और बिछाने के कपड़े
कम पड़ना।
सन्नाटे में पसरी धूप
गरम लू के थपेड़ों से
बढ़ती उमस और बहता पसीना।
उतना परेशान नहीं करते
जितना करते हैं
उसे स्कूल जाते-आते
छेड़ते मनचले
और खामोश भीड़।

रामकृष्ण विनायक सहसबुद्धे

जन्मः 01.01.1956, **पिताः** स्व० विनायक र० सहसबुद्धे, **शिक्षाः** त्रिवर्षीय विद्युत अभियंत्रण, **प्रकाशनः** विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में जनवरी 1975 से रचनाएं प्रकाशित, वर्तमान में माध्यम त्रैमासिक का सम्पादन
संपर्क : 101, श्रीजी निकेतन, सम्राट स्वीट के पास, इन्दिरा नगर, नाशीक, महाराष्ट्र–422009
मो०:7420931046, ईमेल–rkvs56@gmail.com

ग़ज़ल

बेहिचक आप मुझको सजा दीजिये
जुर्म मेरा मगर अब बता दीजिये।
हो सके तो मुझे भी दुआ दीजिये
बेहतरी के लिये कुछ दवा दीजिये।
चुप्पियां आज तेरी सताने लगीं
है ज़रुरी दुआ तो सुना दीजिये।
चाल बदली है मौसम ने फिर से यहाँ
हो सके तो हवा को हवा दीजिये।
दहशतों नफरतों का नया दौर हूं
बस्तियों में मुहब्बत जगा दीजिये।
मैल मन में नहीं हो ये तू भी समझ
है लगी आग दिल में बुझ दीजिये।
घर हमारे भी उजड़े यहाँ आज हैं
बस्तियां फिर नयी कुछ बसा दीजिये।

नींद आती नहीं अब है लोरी बिना
हो सके आप लोरी सुना दीजिये।
ज़ख़्म गहरे बहुत है लगे देह पर
है गुजारिश कि मरहम लगा दीजिये।

आचार्य अनमोल

जन्मः 03.07.1963
पिताः पं० जनार्दन शास्त्री पाण्डेय
सम्पर्कः सी-84, शास्त्री निवास, गली नं. 3, भजनपुरा, दिल्ली-110053, **मो०:** 09654320867, ईमेल- rdmishraanmol@gmail.com

गीत मधुर गाएँगे कैसे?

जगे सरस अनुभूति न मनमें,
काव्य भाव पाएँगे कैसे?
बिना छंद, लय, सुर-तालों के,
गीत मधुर गाएँगे कैसे?

कविता नहीं तुकों का मेला,
ये अनुभव का संचित स्वर है।
सुख-दुख-पीड़ा अवयव इसके,
हृदय-वेदना इसका घर है।
शब्द-अर्थ आधार शिला बिन,
मोहक स्वर लाएँगे कैसे? बिना छंद...

ललित पदों की ये पद-मैत्री,
मीत-मिलन का प्यार सिखाती।
शब्द-शक्ति सम्मोहन द्वारा,
कविता मन में ज्वार जगाती।
बिन आलंबन, उद्दीपन के,
प्यार जगत पाएँगे कैसे? बिना छंद...

संबोधन, उद्बोधन द्वारा,
भाव प्रेरणा मुख पर सजते।
नूपुर-पायल गीत स्वरों में,
रसिक हृदय में मधुरिम बजते।
बिना समर्पण, बिना नेह के,
सुपथ पंथ जाएँगे कैसे? बिना छंद....

डॉ० दिवाकर 'दिनेश' गौड़

जन्मः 05.05.1967,
पिताः श्री सीताराम गौड़
संपर्क : जी-5, जगदंगे निवास, आनंद नगर सोसायटी, साइंस कॉलेज के पीछे, गोधरा, गुजरात-389001
मो०: 09426387438

कारवां जुड़ता गया

देश गाँव छोड़ के, प्रीत प्यार तोड़ के
चल पड़ा मैं डगर, राह अपनी मोड़ के
लोग मिले, हाल पूछें, मैं अकेला तन्हा हूँ
चलता रहा मैं मगर, लोगों को जोड़ के
मैं आगे बढ़ता गया, कारवां जुड़ता गया
अपनी बात कहता गया, दूजों की सुनता गया
कारवां बढ़ता गया, कारवां जुड़ता गया,
भेद-भाव छोड़ के, शोक-हर्ष भूल के
पुष्पों को साथ रख, गीत गाए शूल के
अच्छे-बुरे, सच-झूठ की बात नहीं करता हूँ
बोई गुठली आम की पर काँटे मिले बबूल के
सबकी बात सुनता गया, सबसे बात कहता गया
भूल अपने जख्मों को, सबके घाव भरता गया
कारवां बढ़ता गया, कारवां जुड़ता गया
ख्वाब खूब देख के, बात खूब कर के
रहते रहे गाँव में, किस्से सुन नगर के
मन को मैंने अपने भी, बहलाना सीख लिया
अपना घर भूल कर, बन गए हर घर के
मैं तो बस चलता गया, सबसे मैं मिलता गया
दुख तो मैं सुनता गया, सुख भी मैं कहता गया
कारवां बढ़ता गया, कारवां जुड़ता गया।

विजय 'तन्हा'

जन्मः 09.10.1968 **पिताः** स्व० अवध विहारी लाल गुप्ता
संपर्कः सम्पादक 'प्रेरणा' पत्रिका, पुवायाँ, शाहजहाँपुर-242401, उ. प्र., मो०-9450412708,

कविता

मैं जब भी देखता हूँ लूट, हत्या, अपहरण
चौराहों पर चलती गोलियाँ,
खून पिपाशू, मानव द्वारा होती मानव की हत्या
तब मुझे याद आता है, एक अहिंसा का पुजारी
मैं उसकी यादों में, झूलने लगता हूं
और
उसके ख्वाबों का, हिन्दुस्तान ढूंढने लगता हूं।
हम आज भी देखते है अखबारों में लिखा
किसान परेशान, रोटी से कोसों दूर
आत्महत्या करने मजबूर
जब उसकी अनब्याही बेटियाँ
माँ-बाप के कंधो पर
रखे बोझ को देख रह नहीं पाती हैं
अपना दुःख-दर्द किसी से कह नहीं पाती है
तब माँ-बाप के प्यार दुलार को भूल जाती है
और/रस्सी का झूला बनाकर सदा के लिए झूल जाती है
हम फिर भी उम्मीदों के चिराग वाले रहते है
अपनी खुशियों पर लगाये ताले रहते हैं,
हम सब छल-फरेब से डरते हैं
मगर देश के कर्णधार नेता
करके घोटाले अपनी तिजोरियां भरते हैं।
हम आज भी देखते हैं फुटपाथों पर जूतों पर पॉलिश करती या
मूंगफली-चने बेचती हुई डिग्रीयाँ
या किसी नेता के घर के चक्कर लगाते
दर-दर की ठोकरे खाते हुए डिग्रीयां या
किसी रोज छप जाती हैं खुदकुशी का नया
हादसा बनकर डिग्रीयां।
तब हम सोचने की विवश होते हैं
कि
समूचा देश नफरत की आग में जल रहा है
भ्रष्टाचार दीर्घायू होकर पल रहा है
गाँधी की खादी बदनाम हो रही
मानवता चौराहों पर नीलामी हो रही
ऐसे में हमारे देश के नेता
हम सबको यूं बरगलाते हैं
अरे! अस्त हो रहे सूरज को
उदय बताते हैं।

मंजु लंगोटे

पिता : स्व0 नंदलाल लंगोटे
पति : श्री गौतम कुमार
शिक्षा : एम.ए अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, बी.एड.
संप्रति : रेलवे में वाणिज्य विभाग में सुपरवाइजर के पद पर कार्यरत
संपर्कः श्री कृपा, लिटिल चैम्प पब्लिक स्कूल के पास, सादर, मानस नगर, बैतूल-460001, म.प्र.
मो०: 9753088112

मैं, एक किसान

मैं एक किसान
धरती का भगवान कहलाता हूं
पेट मेरा खाली हो फिर भी
लोगों की भूख मिटाता हूं
छत है मेरी टपकती फिर भी

बारिश की अर्जी लगाता हूं
मैं एक किसान...............
सूद इतना चुकाता हूं
कि सुध अपनी भूल जाता हूं
बच्चों की पढ़ाई छुड़वाकर
अनपढ़ गंवार उन्हें बनाता हूं
मैं एक किसान......
बिटिया के हाथ पीले करने
पत्नि के गहने बेच आता हूं
गरदन में अपनी 'हल', रख के
जुताई का 'हल' निकालता हूं
मैं एक किसान.........
बीज खाद के पैसे भर नहीं पाता
उधार से घबरा जाता हूं
साहूकारों को देखकर घर की चौखट पर
मैं पसीने से तर बतर हो जाता हूं
मैं एक किसान...................
बना के सावन में झूला
मैं फांसी पे झूल जाता हूं
गरीबी अपनी परिवार को
बिना ब्याज दे जाता हूं
मैं एक किसान ....
धरती मां रो पड़ती है
बीबी सुध-बुध खोती है
जब अर्थी मेरी, मेरे घर से
बिना कफन निकलती है
मैं एक किसान...........

डॉ० पूनम माटिया

पिताः श्री श्याम लाल गुप्ता, माताः स्व. मैना गुप्ता, **शिक्षाः** बी.एस.सी, एमएससी, बी.एड, एम.ए, एम.बीए, **संप्रतिः** स्वतंत्र लेखन, मचं-संचालन, साक्षात्कारकर्ता,

सम्पर्कः पाकेट ए, 90बी, दिलशाद गार्डन, दिल्ली–110095 मो०:09319936660, 09312624097, ई–मेल pratibha_shr@yahoo.com

नाम लेवा बेटियाँ

शिक्षा करती है सुना, सामाजिक कल्याण।
बिटिया फिर भी मर रही, बचते नही प्राण।।
इक बेटे की आस ने, करवाए क्या काम।
मात-पिता क़ातिल बने, छीनी बुद्धि तमाम।।
मोक्ष-स्वर्ग की चाह में, बेटा हुआ महान।
इक-इक करके मार दीं, देवी-सी संतान।।
बूँद-बूँद से सींचती, हाड़-मांस में ढाल।
माँ ही भीतर पालती, बिटिया हो या लाल।।
अंतर्मन की पीर है, अँखियन का है नीर।
बिटिया माँ की लाड़ली, किस विधि धारे धीर।।
गर्भपात की बात से, जननी जाए टूट।
ममता का कर खून वो, पिये खून का घूँट।।
बेटी गुण की पोटली, रत्नों का भंडार।
दो कुल की है शान ये, देवी का अवतार।।
पत्नी, माँ सब औरतें, जीवन का आधार।
फिर बिटिया ही क्यूँ लगे, सर पर भारी भार।।
क्यों बेटा प्यारा लगे, बिटिया क्यों अभिशाप।
दोनों ही संतान हैं, नहीं किसी का पाप।।
नहीं पराया धन कहो, मत मानो जंजाल।
बेटा दे दुत्कार जब, बिटिया ले संभाल।।
पूछे बिटिया बाप से-क्या है मेरा पाप।
जीने का अधिकार दो, हर लूँगी संताप।।
बिटिया माँ की लाड़ली, पापा का अभिमान।
दूजे घर फिर क्यों सहे, केवल वह अपमान।।
मारोगे यदि बेटियाँ, ख़त्म करोगे वंश।

फूटेगा घट पाप का, वंश सहेंगे दंश।।

खुशियाँ इक के जन्म पर, दूजे पर क्यों खेद।
बेटा-बेटी एक से, काहे कीजे भेद।।

देकर जन्म न भूलिए, देना इनको ज्ञान।
जन्म सफल होगा तभी, मिले मान-सम्मान।।
मिले मान-सम्मान, लखेगी दुनिया सारी,
मात-पिता का नाम करेगी, बिटिया प्यारी।
मात-पिता का नाम करेगी, बिटिया प्यारी।।

संतोष शर्मा 'शान'

जन्मः 16 अप्रैल, **सम्प्रति :** स्वतंत्र साहित्य लेखन, **विधा-** कहानी, कविता, ग़ज़ल, लेख व हास्य व्यंग

संपर्कः ग्राम-सूरतपुर, पोस्ट-मैंडू, जिला-हाथरस,उ.प्र.-202001, मो०: 8650803221

वतन के लिए

दोस्तो वतन से कर लो प्यार
मिले तिरंगा कफन के लिये।
मरने को तो इंसा मरते है
तू मर कर जिये जा वतन के लिये।।

घुटनों के बल से लेकर ले
पैरों पे तेरे खड़े होने तक
माँ धरती ने सम्भाला है,
बचपन से तेरे बड़े होने तक
अब वक्त है खुद के सम्भलने का
पतझड़ के रूख को बदलने का
लाना है बसंत चमन के लिये
मरने को तो इंसा मरते है।
तू मर कर जिये जा वतन के लिये।

जीते है हम जिस वसुधा पर
सदीयों से कष्ट उठाती है
दे चीर के छाती अन्न हमें
जन-जन की क्षुधा मिटाती है।
अब वसुधा का कष्ट मिटाना है
हरी चादर डाल सजाना है
मरने को तो इंन्सा मरते है
तू मर कर जिये जा वतन के लिये।

धरती ये तेरी-मेरी नहीं....
यह सारा वतन हमारा है
ईक फूल नहीं प्यारा हमको
संसार का चमन हमारा है।
हर 'जाँ' पे हक वतन का है
संग लाये लहू बदन का है
धरती माँ ले वंदन के लिये
मरने को तो इन्सां मरते है
तू मर कर जिये जा वतन के लिए

सीमा कुमारी चौधरी

जन्म : 05 जून 1985
पिताः स्व० सिद्धनाथ चौधरी,
शिक्षाः एम.ए (हिन्दी), बी.एड., एम०फिल०, **प्रकाशनः** 10 आलेख प्रकाशित,
संपर्कः शर्मा निवास, गणेश नगर, पांडव नगर काम्पलेक्स, पूर्वी दिल्ली-110092, मो०:8170981890, 9873655519,
ईमेलः seemachoudhudhury@gmail.com

संकल्प हमारा

प्रातः निष्छल भाव से,
ईश्ट अराधना किया करती हूँ।
अपने उपवन में पलने वाले,
सर्प को दूध चढ़ाया करती हूँ।
पौराणिक कथाओं पर विश्वास कर,
देव तूल्य पूजा इनको।
कर्तव्य और कर्म में लिपटी रही मैं,

प्रसन्नता मिली मेरे तन-मन को।
लेकिन इनके व्यवहारों से,
मेरी हृदय खण्डित हुई।
मेरे आश्रय में पलकर
फुंकार लगा रहे हैं हमें ही देख।
एक दर्द मेरे हृदय में हुई,
टूट गई मेरी आराधना।
इच्छा थी कि उपकार करू,
अपनी जीवन श्रेष्ठ करूं।
पर स्नेहमय उन संबंधों को,
ये विषधारी क्या जाने।
मैंने किया संकल्प,
निभाना है अपना कर्तव्य।
चाहे जीवन के राह में,
आँधी हो या तूफान।
मुँह मोड़ना नहीं कर्तव्य से,
अपना कर्तव्य निभाना है।
दीपक में ज्योति है जब तक,
हरना है विषधारियों के विषय को तब तक
है कर्त्तव्य यही हमारा,
यही संकल्प है हमारा।

प्रभाषु कुमार

जन्मः 23 जून 1988, **पिताः** श्री एफ. डी. माली, **शिक्षाः** परास्नातक, बी.एड., **सम्प्रतिः** शिक्षा अनुसंधान विकास संगठन इलाहाबाद में संभागीय निदेशक के पद पर कार्यरत, **सम्मानः** महादेवी वर्मा सम्मान, काव्य कमल सम्मान, अचीवमेंट अवार्ड, काव्य कमल सम्मान, वागेश्वरी पुंज अलंकरण

सम्पर्कः 133/11ए, अवतार टाकीज के पीछे, तेलियरगंज, इलाहाबाद-211004, मोः 9235795931

ई–मेलः prabhanshukumar63@gmail-com

ईश्वर कभी सोता नही

ईश्वर
जिसको इन्सान ने बांटा
राम, अल्हा, ईसामसीह, गुरूनानक
वह ईश्वर
जब भारत में होता है
तो राम कृष्ण के रूप में
पूजा जाता है
तो वही जब
अमेरिका अन्य देशों में होता है
जो जीसस, अल्हा में
तब्दील हो जाता है
वह कभी सोता नहीं है
जिस समय
अमेरिका अन्य देशों के
मंदिरो, चर्चो, गुरूद्वारा के
कपाट बन्द हो रहे होते है
तो दूसरी तरफ भारत के
मंदिरो, मस्जिदों, चर्चो, गुरूद्वारों में
गायत्री मंत्र, अजान, बाइबिल तथा
गुरूवाणी की ध्वनि गूँज रही होती है।
वह देख रहा होता है कि
जहां एक तरफ चढ़ाने के लिए
पांच रूपये नहीं है
तो दूसरी तरफ पांच डालर की माला
पहनायी जा रही होती है।
जहां एक तरफ लोग
उगते सूर्य को नमस्कार कर रहे होते है
तो दूसरी तरफ चांद का दीदार हो रहा होता है।
वह ईश्वर
जब अन्य देशों में

न्याय की वकालत कर रहा होता है
तो दूसरी तरफ
देख रहा होता है
भारत में दर्शनार्थियों से भरी पल्टी बस के मूर्दो को
यह सत्य है
वह बहुत बड़ा
न्यायाधीश है
लेकिन विबश है
अपने विधि के विधान से
वह देख रहा होता है
सृष्टि के हर छोटे अणु को
जिसमें उसकी सत्ता जीवित है।

वन्दना श्रीवास्तव

माताः श्रीमती सुमन श्रीवास्तव, **पिता**-श्री हरिशंकर श्रीवास्तव, **पतिः** श्री ओमेन्द्र श्रीवास्तव, **शिक्षा**-डबल एम.ए, यूजीसी नेट, बी.एड., यू.जी.सी नेट, पी.एच.डी (कार्यरत) **सम्प्रतिः** शिक्षिका, बेसिक विभाग, **संपर्कः** म.न.–12, डिलाईट होम कालोनी, जानकीपुरम्, लखनऊ–226021, उ.प्र., मो0: 9453672244

विधवा

चाहकर भी नहीं,
लगा सकती,
तुम्हारे नाम का,
सिन्दूर,
यह बिन्दी,
यह लाली,
और पैरों में,
लाल लाल,
महावर।
नहीं पहन सकती,
हाथ भर चूड़ियाँ,
नाक में नगीने,
वाली नथ,
और सर पर,
लाल लाल,
चूनर।
हाँ लाख जतनकर,
भी नहीं,
डाल सकती,
तुम्हारे नाम का,
वो मंगलसूत्र,
जो मुझे,
जान से भी,
प्यारा है।
हम भले ही,
शरीर से,
साथ नहीं,
पर आत्मा आज भी,
तुम्हारी है,
पर फिर भी,
सुहागन की तरह,
रहने पर,
दुनिया वाले,
टोकते हैं मुझे।
और ऐसा करने से,
रोकते हैं मुझे।
क्योंकि उनकी,
नजर में,
मैं एक,
विधवा हूँ न।
विधवा हूँ न।
विधवा हूँ न।

साहित्य मेला–2019 में सम्मान के लिए चयनित साहित्यकार

दिनांक 17.02.2019 को इलाहाबाद (प्रयागराज) में आयोजित होने वाले 16वें साहित्य मेला में विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की ओर से सम्मानित होने वाले साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय निम्नवत है:-

साहित्य रत्न उपाधि

डॉ० सुनील कुमार–अमृतसर, पंजाब 31 अगस्त 1982 को जन्में परास्नातक –हिन्दी, यूजीसी–नेट/जे.आर.एफ., पी.एच.डी., मार्गदर्शन एवं परामर्श, पत्रकारिता एवं जनसंचार, अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, यूजीसी प्रायोजित पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में 2011 से 2016 तथा 2009 से गुरुनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर के हिन्दी में स्नातकोत्तर स्तर पर एम.ए, एफ.फिल प्री–पी.एच.डी का अध्यापन कर रहे है. आपके निर्देशन मे चार शोध तथा 39 छात्र एम.फिल कर रहे है. आपके शोध पत्र संत गरीबदास के लिए आपका चयन किया गया है.

राष्ट्रभाषा सम्मान

डॉ० मनिका शइकीया–नगांव, असम परास्नातक, पी.एच.डी., असमिया और हिन्दी में समान दखल रखने वाली, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा हिन्दीत्तर भाषी हिन्दी लेखक पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है. आपने दो पुस्तकों का असमिया से हिन्दी तथा 5 पुस्तकों का हिन्दी से असमिया में अनुवाद भी किया है.

राष्ट्रभाषा सम्मान

डॉ० मधुकर देशमुख–पुणे, महाराष्ट्र 13 अगस्त 1969 को जन्में, परास्नातक, एम.फिल, पी.एच.डी–हिन्दी है. आपकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है. आपको हिन्दी सेवी सम्मान, आदर्श शिक्षक सम्मान सहित लगभग एक दर्जन सम्मान प्राप्त हो चुके है.

शिक्षक श्री

डॉ० कामिनी अशोक बल्लाल–औरंगाबाद, महाराष्ट्र
11 मई 1984 को जन्मी, परास्नातक, पी.एच.डी हिन्दी, बी.एड एवं एम.एड. सभी प्रथम श्रेणी में, एमसीसी, एनसीसी 'सी', कई संस्थाओं से जुड़ी हुई, कई जनरल की संपादकीय समिति की सदस्य, कई राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारों में सहभागिता निभा चुकी, आपकी 10 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है, हिन्दी गौरव अवार्ड सहित कई सम्मानों से सम्मानित है

हिन्दी सेवी सम्मान

श्रीमती पूनमा रानी शर्मा, कैथल, हरियाणा
18 दिसम्बर 1988 को जन्मी : श्री जयकिशन अत्री एवं श्रीमती श्यामा देवी जी की पुत्री एवं श्री कुलदीप शर्मा जी की पत्नी ने एम.ए., बी.एड. की पढ़ाई की है. अध्ययन के दौरान ही हिन्दी लेखन के प्रति रुचि रखने वाली श्रीमती पूनम ने बी.एड. शिक्षण के दौरान अपने कॉलेज की पत्रिका का छात्र संपादक भी रह चूकी है. विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय भूमिका भी निभाती रही है.

श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास द्वारा सम्मानित होने वाले

राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान

हितेश कुमार शर्मा–बिजनौर, उ.प्र. 30 दिसम्बर 1936 को जन्में स्व०

आर.पी.शर्मा के पुत्र एवं श्रीमती ऊषा शर्मा के पति श्री शर्मा ने बी.काम, एल.एल.बी. की शिक्षा ग्रहण कर वकालत का पेशा अपनाया. विभिन्न संस्थाओं द्वारा 206 से भी अधिक सम्मान/उपाधियां से सम्मानित, 19 स्वरचित, 15 सामूहिक काव्य संकलन सहित अनकों सहयोगी संकलनों का प्रकाशन एवं संपादन कर चुके श्री शर्मा बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी है. आपका पेशा भले ही वकालत का रहा हो मगर आप हिन्दी सेवी अधिक रहे है.

हिन्दी सेवी सम्मान

श्री शिवकरण दुबे 'वेदराही'-रीवा,मप्र. 15 सितम्बर 1958 को जन्में, स्व. अवध विहारी दूबे के पुत्र एम.ए हिन्दी कर चुके, राजभाशा अधिकारी एनटीपीसी, सिंगरौली से सेवानिवृत्त है तथा आपके तीन काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके है एवं विभिन्न संस्थाओं से एक दर्जन से भी अधिक सम्मान प्राप्त हो चुके है।

५-उपेन्द्र नाथ अश्क सम्मान

डॉ. सीमा वर्मा-लखनऊ, उ.प्र.

स्व. आनंद कुमार खरे की सुपुत्री एवं

पूनम रानी

जन्मः 18.12.1988, **पिताः** श्री जयकिशन अत्री
माताः श्रीमती श्यामा देवी, पतिः श्री कुलदीप शर्मा
शिक्षाः एम.ए., बी.एड.
संपर्क : कुरुक्षेत्र रोड, आदर्श नगर, नजदीक देवी माई का मंदिर, म.नं. 538/11, कैथल हरियाणा
मो०: 9306332197, 7494952957

संस्कारो से दूर युवा

जाने क्यूँ आज देश को क्या हो गया है,
हर युवा का संस्कार जैसे खो गया है।
ना बात करने की तमीज, ना काबलियत
सिर्फ अपनी झूठी तारीफ भाए, है यही हकीकत
अपनी खुशी अपनी बात बस यही भाता है
दुश्मन लगता है वही जो सच्ची राह दिखाता है।
तभी तो आजकल लोग मर्यादा की सीमा को पार कर रहे है।
बड़ी तो क्या छोटी मासूम बच्चियों का भी बलात्कार कर रहे है।
झूठे रिश्ते निभाते हैं, माँ-बाप को घर से निकाल रहे है
दो रोटी गरीबों को नहीं दे सकते, घरों में कुत्ते पाल रहे है।
घोर कलियुग आ गया है दिखे हर तरफ अंधेरा
सोचकर सो जाते है बुजुर्ग आखिर कभी तो होगा सवेरा
कभी तो होश आएगा दुश्मनी भूल बढ़ेगी मित्रता
होगा बेड़ा पार तभी जब मन में रहेगी पवित्रता।
बस बहुत खो चुके हम
जागो युवाओं अपना मन साफ करो।
अच्छे कर्म करे, मीठा बोलो,
पवित्रता पर विश्वास करो।।
धार्मिक कार्यो में मन लगाओ,
इन्द्रियां वश में हो आएंगी।
बस एक बार कोशिश करके तो देखो
जरुर मेरे देश की तरक्की हो जाएगी।

डॉ० पी०आर० वासुदेवन 'शेष'

जन्मः 06.04.1959, **सम्प्रति** : वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, प्रधान महालेखाकार कार्यालय, चेन्नई
संपर्कः जी-4, अक्षया फ्लैट्स, 53, ईरुसप्पा स्ट्रीट, आईस हाउस, त्रिप्लिकेन, चेन्नई-600005,
मो. 9444170451
ई-मेलः vasudevanshesh@gmail.com

आम आदमी

महंगाई ने तो सबको मारा
उसके आगे हर कोई हारा।

अब क्या करेगा आम आदमी बेचारा
खर्चे से लदा है उसका जीवन सारा।

चीजें कम, दाम ज्यादा बढ़ रहे हैं
हर तरफ लूटने के तरीके दिख रहे हैं।
तेल, चावल, दाल, पेट्रोल, ईंधन ने तो आसमान छु लिया है
घर की रसोई से गायब करने पर विवश कर दिया है।

बेचारे भोले भाले इंसान को जुर्म करने पर मजबूर कर दिया है
वह रिश्वत और घूस लेने पर विवश हो गया है।

यह समस्या तो सभी पर भारी है
अमीर को राजा और गरीब को रंक बना रही है।

क्या होगा! अगर सब ऐसे ही चलता रहेगा
क्या आम आदमी जुलम की गंगा में डुबकी लगाता रहेगा।

सोचना तो यह है कि गरीब अब जिए या मरे
ऐसी गंभीर स्थिति में वह अपना गुजर कैसे करे?

इस समस्या से निपटने को हमें एक जुट होना होगा
इस महंगाई को रोक सकें ऐसा मार्ग ढूंढना होगा।

श्री अपूर्व वर्मा की धर्मपत्नी डॉ. सीमा वर्मा परास्नातक-हिन्दी, पीएचडी है. आपकी लेखन, अध्ययन एवं अध्यापन में रुचि है. आपकी नीर की छांह में, डार से बिछुड़ी पाती, सोन-चिरैया काव्य संग्रह तथा हिन्दी पत्रकारिता में नारी जागरण-शोध ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके है। आपको म.प्र. तुलसी सम्मान, हिन्दुस्तान टाइम्स का 'वोमेन अवार्ड' लेखन के क्षेत्र में प्राप्त हो चुके है।

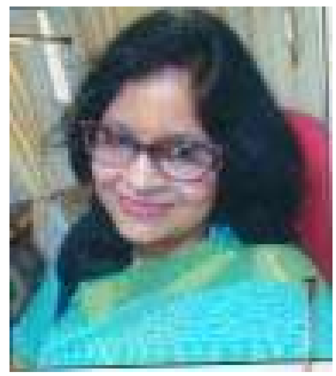

कैलाश गौतम सम्मान

प्रभांशु कुमार- इलाहाबाद,उ.प्र.
23 जून 1988 को जन्में श्री एफ. डी. माली के पुत्र एवं परास्नातक, बी.एड. तथा शिक्षा अनुसंधान विकास संगठन इलाहाबाद में संभागीय निदेशक के पद पर कार्यरत है. आपको विभिन्न संस्थाओं से अनको सम्मान व उपाधियां प्राप्त हुई है।

पुरूषोत्तम सिंह रौठौर 'दाऊजी'

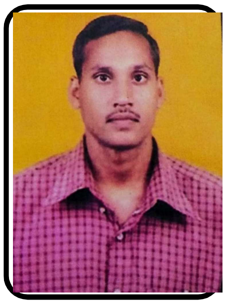

जन्मः 07.05.1976, माता-पिता : स्व. सत्यवती राठौर, स्व० भागवत सिंह राठौर, **शिक्षाः** एम. ए-हिन्दी, डिप्लोमा इन छत्तीसगढ़ी, विद्या वाचस्पति-मानद उपाधि, डिप्लोमा इन लोग संगीत, पीजीडीसीए, साहित्याचार्य, साहित्य रत्न, साहित्य विद्यालंकर, साहित्य वाचस्पति **संप्रतिः** जिला लघु वनोपज संघ में संदेशवाहक के पद पर कार्यरत, **संपर्कः** कार्यालय जिला लघु वनोपज संघ, वनमंडल, खैरागढ़, जिला-राजनंदगांव, छत्तीसगढ़-491861, मो०: 9407666724, 9406215680

आदमी मशीन हो गया

आदमी आज बिलकुल मशीन हो गया।
इन्सानियत अब, बंजर जमीन हो गया।। आदमी....
हर आदमी रोता, समय का रोना।
किसी की चांदी, तो लूटे कोई सोना।।
नहीं कोई नाता, न है कोई रिश्ता।
जिधर देखो उधर पैसा ही फरिश्ता।।
अब रात भी कमाने, का दिन हो गया।। आदमी.....
जिधर जाओ उधर, मची भागदौड़।
जिस कंपनी में देखो, मची है होड़।।
मामूली नौकरी में लगाते, रकम मोटी।
कितना घूमाती है, दो वक्त की रोटी।।
कल तक धवल था, अब मिजाज रंगीन हो गया। आदमी...
दिन भर भाग दौड़ कर पहुंचता घर।
करे गुस्सा कभी बीबी, कभी बच्चों पर।।
नशा के बल पर, आती रात में नींदे।
ऐसे नौजवानों से, क्या बांधे उम्मीदें।।
माँ बाप के झगड़ों में, बच्चा यतीम हो गया।। आदमी.....
सम्मान तब तक मिले, जब कमाये पैसा।
बाप कमाने की मशीन है, जमाना है कैसा।।
घर की बहू-बेटियां पर घूंघट कहाँ।
दो पैसे की नौकरी, दिखाये सारा जहाँ।।
मुझे तो इन बातों में, अब यकीन हो गया।
आदमी आज बिलकुल मशीन हो गया। आदमी........२

कुम्भ मेला-2019 के प्रमुख उपयोगी अधिकारियों के नाम एवं नंबर

डॉ० आशीष कुमार गोयल, मंडलायुक्त –9454417492, 0532–2250800,
श्री सुहास एल.वाई., जिलाधिकारी 9454417517, 0532–2250300
श्री अशोक कुमार कनौजिया, एडीएम-नगर 9454417809,
श्री मारतन्ड प्रताप सिंह-एडीएम वित्त/राजस्व– 9454417588
श्री अमर पाल सिंह, एडीएम -आपूति– 9454417812
श्री महेन्द्र राय, एडीएम-प्रशासन 9454417810
श्री विश्वभूषण मिश्र, नगर मजिस्ट्रेट 9454417831

मेला प्रशासन-कुम्भ मेला

श्री विजय किरन आनन्द, मेलाधिकारी- 9412050016, 9454417212
श्री दयानन्द प्रसाद, अपर मेलाधिकारी, 9711825726, 9451370025
श्री भरत मिश्र, अपर मेलाधिकारी, 7379855556, 9415058984
श्री दिलीप कुमार त्रिगुणायत, अपर मेलाधिकारी, – 7080188947
श्री चन्द्र पाल तिवारी, अपर मेलाधिकारी – 9140887498
श्री विवेक चतुर्वेदी, उप मेलाधिकारी- 9453772116, 7007716202
श्री दुर्गेश मिश्र, उपमेलाधिकारी, 7065126463
श्री राजीव कुमार राय, प्रभारी अधिकारी- 9454417841,
श्री सुरेन्द्र पाल विश्वकर्मा, उपमेलाधिकारी- 9415939310

सेक्टर मजिस्ट्रेट

श्री पूरन सिंह राणा, सेक्टर 01 7985295012, 9412293125

ओमवीर करन

जन्मः 15.05.1980, **माता/पिताः** बिट्टी, छोटे लाल, **शिक्षाः** एम.ए-लोक प्रशासन, **सम्प्रतिः** भिलाई इस्पात सयंत्र में प्रचालक के पद पे कार्यरत **प्रकाशनः** पत्रिकाओं में लघुकथाएं, कविताएं प्रकाशित, 12 साझा काव्य संकलनों में प्रकाशन, भूलना चाहो तो भी न भुला पाओगे, चेहरे की तन्हाई शीघ्र प्रकाश्य **सम्मानः** जिला स्तरीय काव्य पाठ में प्रथम स्थान, काव्याकुर सम्मान

संपर्कः 6/सी रिसाली सेक्टर, भिलाई, जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ-490006, मो०: 9406276046, 7746916245, ई-मेलःomveerkaran@gmail.com

मेरा बयान लिया जाये

कातिल हूँ मैं मेरा बयान लिया जाये
ज़मीर मारा है मैंने मेरा बयान लिया जाये
बेशक इतिहास ना खड़ा करे हुकूमत को कठघरे में
कविता तो करेगी ही ......
कवि हूँ मैं मेरा बयान लिया जाये
इतनी देरी कहीं सच पे लीपापोती के लिये तो नही ...
जल्दी में हूँ मैं मेरा बयान लिया जाये
जेलों न्यायालयों और पुलिस में सबसे ज्यादा घूसखोरी है
भ्रष्टाचार की घुन ने लोकतंत्र के चारों स्तम्भों की नीव भी कहाँ छोड़ी है
सच बोलता हूँ मैं मेरा बयान लिया जाये
कुछ लोगों की सहूलियतें हैं कुछ लोगों की रंजिशें हैं
हिंदू मुस्लिम दलित कुछ नही सबकी सब साजिशें हैं
मेरी बातों पे ध्यान दिया जाये
सिर्फ जिंदगी का तजुर्बा है तुम्हें मुझे मौत का भी है
मौत से गुज़रा हूँ मैं मेरा बयान लिया जाये
कैसे मुल्क मुर्दों में तब्दील हुआ ....
जिंदा लोग बतायेंगे तुम्हें .....
जिंदा हूँ मैं मेरा बयान लिया जाये
कवि हूँ मैं मेरा बयान लिया जाये

श्री रजनीश कुमार मिश्र, से0 02
8808364136
श्री संदीप कुमार श्रीवास्तव से0 3
9451896880, 8077039472
श्री अविनाश त्रिपाठी, से0 4, 5
9415659228
श्री राम आसरे वर्मा, से0 6,
8299816078
श्री राजेश प्रसाद, से0 7
9559800408
श्री सुशील चन्द्र गुप्ता, से0 8
9415356950, 7007086202
श्री कृपा शंकर पाण्डेय, से0 9
9565329000
श्री योगेन्द्र कुमार से0 10, 11
9451009001
श्री जंग बहादुर यादव 12
9794710249, 8707548511
श्री विमल कुमार दुबे, से0 13
8707548511
श्री जितेन्द्र पाल, से0 14
7985234476
श्री संजीव ओझा, से0 15
8650616307
श्री सुशील चौबे, से0 16
7309398396
श्री राम विलास यादव, से0 17
8218001434
श्री आलोक कुमार गुप्ता, से0 18
9927760215
श्री सुनील कुमार यादव, से 19, 20
9412481554
श्री विवेक कुमार सिंह, वित्त नियंत्रक-
9140589371
श्री देवराज मिश्र, स्टोर कीपर
9336045410

पुलिस विभाग

श्री सत्य नारायण साबत, एडीजी, इलाहाबाद जोन 9454400139,
श्री मोहित अग्रवाल, आईजी, इलाहाबाद परिक्षेत्र-9454400195, 0532-2260229
श्री कवीन्द्र प्रताप सिंह, वरिष्ठ पुलिसस अधीक्षक - 9454400355

राजीव कुमार दास

जन्म : 12.02.1983, **पिताः** श्री लालदेव राम
संपर्कः लोहसिंघना रोड, राजेन्द्र पथ, हज़ारीबाग, झारखंड-825301, मो०:09308827661, 7277647593,
ईमेल: rajeevgo999@gmail.com

ग़ज़ल

कभी दुनिया झुकाए थे वही दुनिया झुकाना है
हमें भारत को फिर से सोने की चिड़िया बनाना है
दिया है हमनें वेदों को दिया विज्ञान हमने ही
जलाया रौशनी जग में इसे ना अब बुझाना है
बताया चाँद की दूरी सितारों को गिनाया हूँ
महर्षि-ऋषियों का पावन वतन को गुरू बनाना है
सनातन तो पुराना है क़यामत से क़यामत तक
मधुर रिश्ता सभी से है इसे आगे निभाना है
कहीं ना जो मिले मजहब सभी को हमने पाला है
वसुधैव-कुटुंबकम का यहाँ रिश्ता पुराना है
भटकती राहों से तुम ना भुला देना विरासत को
पुराने संस्कारों को दोबारा फिर से जगाना है
मोबाईल का नशा जिसको उमर से पहले बूढ़ा वो
नज़र पे चश्मे ना हो ना ही बालों को पकाना है
सुलाया करती थी गाकर हमेशा मुझको नींदों से
नरम बिस्तर पे नानी को घरों में लोरी सुनाना है
चमन में हो अमन हर-पल सभी की चाहतें ऐसी
हज़ारों फूल खिलते हैं बहारों को हँसाना है

मुकेष कुमार 'ऋषि वर्मा'

जन्म : 05.08.1993 **पिताः** श्री पूरन सिंह, **माताः** श्रीमती रामा देवी, **शिक्षाः** एम.ए, आईजीडी बॉम्बे व पांच प्रमाण पत्रीय कोर्स, **प्रकाशनः** आजादी का खोना ना, संघर्ष पथ-काव्य संग्रह,**अध्यक्ष/सचालकः** बृजलोक साहित्य-कला-संस्कृति अकादमी एवं ऋषि वैदिक साहित्य पुस्तकालय

श्री नितीन तिवारी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, इलाहाबाद 9454400248, 0532—2440700
श्री सिद्धार्थ शंकर मीणा, पुलिस अधीक्षक-नगर, इलाहाबाद-9454401014
श्री कड़ेदीन, प्रभारी जल पुलिस 9454405246
श्री नीरज पाण्डेय, अपर पुलिस अधीक्षक, कुम्भ मेला 9454401971
मुख्य अग्निशमन अधिकारी, 9454418339
श्री भाष्कर मिश्रा, निरीक्षक/प्रभारी अखाड़ा/सुरक्षा 9415630207
श्री अंजनी कुमार राय, प्रभारी निरीक्षक, कोतवाली, कुम्भ मेला- 9721702877
श्री उमेश प्रताप सिंह, प्रभारी परेड, कुम्भ मेला 9415129363
श्री लक्ष्मण पर्वत प्रभारी निरीक्षक, महावीर जी 9918147875
श्री संजय यती, थाना प्रभारी, जी.टी. झूसी 9415647360
श्री मनोज कुमार शुक्ल, थाना प्रभारी, अरैल 9415178054

स्वास्थ्य विभाग

डॉ.ए.के. पालीवाल, अपर निदेशक, चिकित्सा 9412068859, 9454455421
डॉ० गिरजा शंकर बाजपेयी, मुख्य चिकित्साधिकारी 9454455138, 9415753457
डॉ० एस.पी. सिंह, प्रधानाचार्य, मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज, 7355594086
डॉ० शारदा प्रसाद, क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी- 8004413977
डॉ0 अनिल राय, यूनानी अधिकारी 9415443569
डॉ० राजेन्द्र केसरवानी, जिला होम्योपैथिक चिकित्साधिकारी 9415675858
डॉ० अखिलेश सिंह, प्रभारी होम्योपैथिक 9839520516
डॉ० सुभाष चन्द कैथवास, चिकित्साधिकारी 8318096024

सम्पर्कः ग्राम-रिहावली, डाक-तारौली गूजर, फतेहाबाद, आगरा-283111, उ.प्र. मो०: 9457879120,
ईमेल- mukeshkumarverma8@gmail.com

वो बाबूजी की साईकिल

खटर-पटर करती
हौले-हौले चलती
वो बाबूजी की साईकिल।

दूरे से ही दिख जाती
कच्चे रास्तों में भी बड़े आराम से निकल जाती
वो बाबूजी की साईकिल।

जब भी मुझको चोरी-छिपे मिलती
मुझे लेकर दो-चार तो जरूर गिरती
वो बाबूजी की साईकिल।

न टूटती, न फूटती
पर खटर-पटर जरूर करती
वो बाबूजी की साईकिल।

आज घर के एक कौने में पड़ी-पड़ी कराहती
सड़कों की शेरनी अपनी दुःख भरी व्यथा सुनाती
वो बाबूजी की साईकिल।

अपने अच्छे दिनों के आने का इंतजार करती
पेट्रोल-डीजल की बड़ी कीमतों से उसकी आस पूरी होती दिखती
वो बाबूजी की साईकिल।

डॉ० नायाब अहमद खान, चिकित्साधिकारी–9838135913
डॉ० रवीन्द्र कुमार त्यागी चिकित्साधिकारी- 9415451972, 9415197231
डॉ0 राम गोपाल वर्मा, चिकित्साधिकारी–9453460795
डॉ0 अभिषेक सिंह, चिकित्साधिकारी– 94153605999
डॉ0 अनुपम द्विवेदी, चिकित्साधिकारी– 8173844454
डॉ0 संजय कुमार सिंह, चिकित्साधिकारी– 9919415840
डॉ0 अविनाश चन्द्रा, चिकित्साधिकारी– 9415683111
डॉ0 समीर श्रीवास्तव चिकित्साधिकारी– 9935480216
डॉ0 विनोद कुमार, चिकित्साधिकारी– 8922911121
डॉ0 संजय कुमार, चिकित्साधिकारी– 9452523392
डॉ0 नीरज मिश्रा, चिकित्साधिकारी– 8853614761
डॉ0 अभिमन्यु कुमार, चिकित्साधिकारी– 9415896626
डॉ0 उत्सव सिंह, चिकित्साधिकारी– 9415235273

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग
श्री हेमन्त कुमार सिंह, उप निदेशक सूचना/नोडल अधिकारी कुम्भ 7317678650, 9453005426
डॉ० संजय राय, उपनिदेशक, सूचना- 9453005380
श्री धर्मवीर खरे, सूचनाधिकारी–8737008603
श्री राजेश राय, सूचनाधिकारी' 9414141488

महिला हेल्पलाईन- 1090

मुख्यमंत्री कार्यालय- 1076

विनोद कुमार दुबे को साहित्य शिरोमणि सम्मान

भांडुप के वरिष्ठ शिक्षक श्री विनोद कुमार दुबे को उनकी सुदीर्घ हिन्दी सेवा, उत्कृष्ट शैक्षणिक, सामाजिक व साहित्यिक सेवा के आधार पर विक्रम शिला हिंदी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार द्वारा साहित्य शिरोमणि से सम्मानित किया गया. यह पुरस्कार उन्हें श्री मौन तीर्थस्थल, महाकाल नगरी, उज्जैन में विद्यापीठ के कुलाधिपति संतश्री सुमन भाई मानसभूषण, कुलसचिव श्री देवेन्द्र नाथ शाह, प्रतिमशाह भाष्कर शाह के कर कमलो द्वारा १३ दिसम्बर को दिया गया.

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1–20 **वर्ष से कम उम्र वालों के लिए:** पं. नेहरु सम्मान(देश हित व समाज सेवा), चन्द्रावती देवी सम्मान (हिन्दी व साहित्य सेवा), गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान(समाज सेवा), बचपना सम्मान (किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए)

2–20 से 40 **वर्ष के लिए:** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए), पवहारी शरण द्विवेदी सम्मान(समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए) निर्भया सम्मान-(महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किए गये कार्य के लिए), पत्रकारश्री (पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान), कलाश्री(कला (नाटक/गायन/वादन/चित्रकला, नृत्य) के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), समाजश्री (समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), काव्यश्री (काव्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), व्यंग्यश्री (व्यंग्य-गद्य/पद्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), कहानीश्री (लघुकथा/कहानी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए)

3–40 **वर्ष से ऊपर के लिए:** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), पत्रकार रत्न (पत्रकारिता/संपादन के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), समाज शिरोमणि (समाज सेवा के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), काव्य शिरोमणि (एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित), साहित्य शिरोमणि (समग्र साहित्य लेखन, एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित)

4-सभी आयु वर्ग के लिए: हिन्दी सेवियों के लिए: विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान (हिन्दी की विशेष सेवा के लिए)**, राष्ट्रभाषा सम्मान** (हिन्दीत्तर भाषी राज्यों के हिन्दी प्रेमियों के लिए जो हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार व लेखन कार्य कर रहे है)**, राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). **शिक्षकश्री:** (शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए), **विधिश्री**-(विधि के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी सेवा के लिए)

5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं. इनके लिए कम से कम 100 पृष्ठों की किसी एक विषय पर

लिखि पाण्डुलिपि जो 2016 के बाद लिखी गई हो, प्रकाशित/अप्रकाशित हो, पर दिया जाएगा. प्रत्येक के लिए दो हिन्दी साहित्य सेवी प्रस्तावक का होना आवश्यक है.

विशेषः 1. प्रत्येक वर्ग के लिए दिये गये विभिन्न सम्मानों के लिए उत्कृष्ठ किसी एक का ही चयन किया जाएगा। 2. उपाधियों के लिए चयन त्रिस्तरीय निर्णायक मंडल द्वारा किया जाएगा. 3. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा साथ में एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका भेजना होगा। 4. क्रम संख्या एक के लिए सहयोग राशि रुपये 100/ मात्र तथा क्रम संख्या 2 से 5 के लिए रुपये 500/ सहयोग अपेक्षित है। 5. सभी आयु वर्ग में शामिल प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज मासिक की वार्षिक सदस्यता (रुपये 150/ निशुल्क) प्रदान की जायेगी। 6. सभी वर्ग में विजयी प्रतिभागियों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की साधारण सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी। 7. क्र.सं. 2 से 5 तक के सभी प्रतिभागियों को संस्थान द्वारा प्रकाशित रुपये 500/ तक की पुस्तकें उपहार स्वरुप प्रदान की जायेगी। 8. सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट/धनादेश/ सीधे खाते में (आन लाईन/ऑफ लाईन) युनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी भी शाखा से 'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद' के नाम से खाता संख्याः 538702010009259 आईएफएससी कोड–यूबीआईएन–0553875 में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा. 9. किसी भी दशा में रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी. 10. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. सम्मान डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा. 11. अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार करना संभव नहीं होगा। 12. किसी प्रकार के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद(प्रयागराज) होगा. अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करें:

अंतिम तिथिः 15 नवम्बर 2019

संपर्क कार्यालयः

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, श्याम डी.जे., लक्सों कंपनी के सामने,
रामचन्द चन्द्र मिशन रोड, मुंडेरा, धूमनगंज, इलाहाबाद (प्रयागराज)–211011

पंजीकृत कार्यालय

एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी,
मुण्डेरा, इलाहाबाद (प्रयागराज)–211011, उत्तर प्रदेश, भारत
ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com
9335155949